जनवरी, 2022 वर्ष : 43 अंक : 01

www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

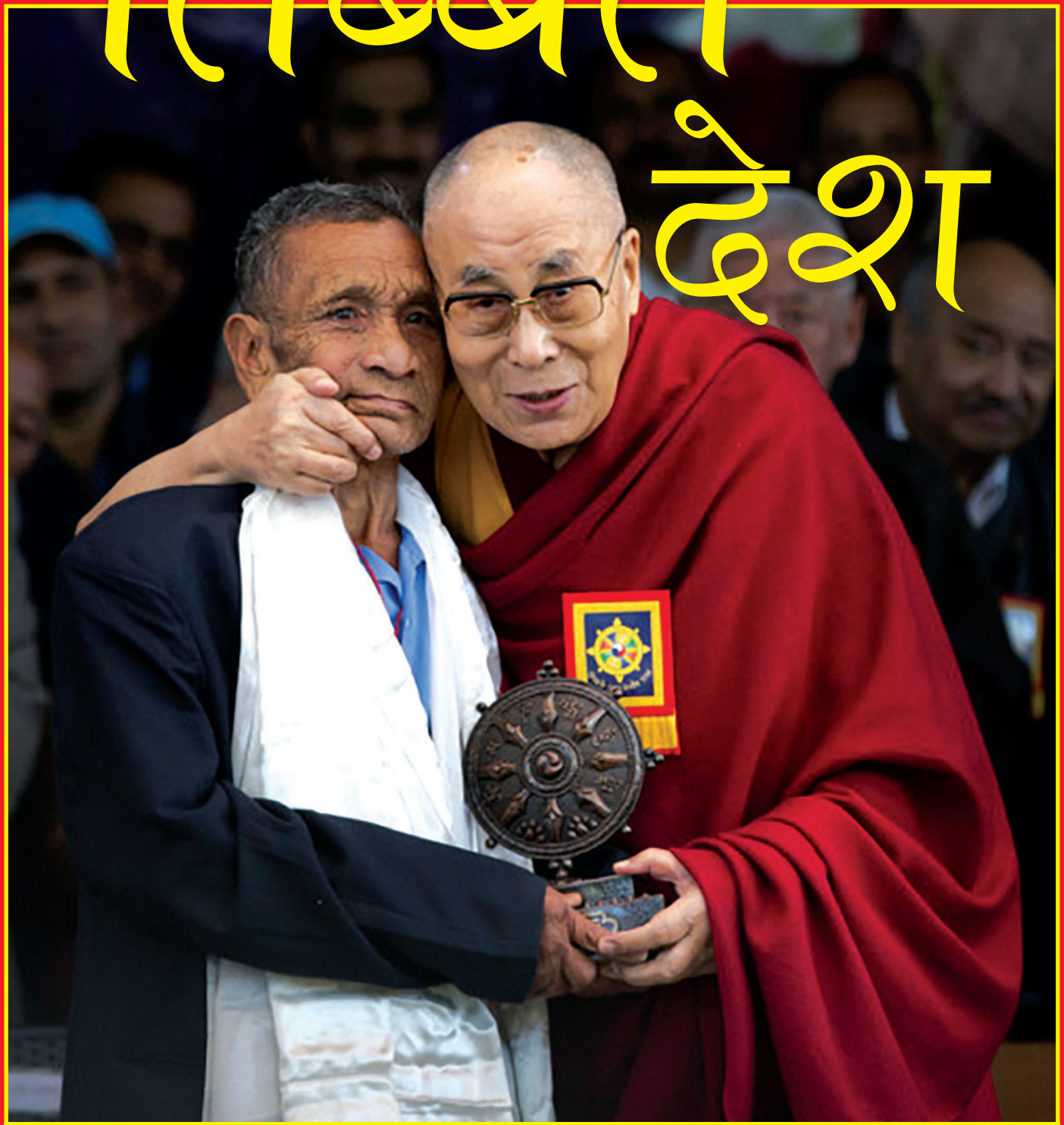

परम पवन दलाई लामा के साथ असम राइफल्स के हवलदार श्री नरेन चंद्र दास।

मूल्य :10 रु , वार्षिक : 100 रु

जनवरी, 2022 वर्ष : 43 अंक :01

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित

तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

श्री डोंगचुंग न्गोडुप के साथ एपीआईपीएफटी के संयोजक श्री सुजीत कुमार

प्रधान संपादक
जमयंग दोरजी , जिगमे सुलट्रिम

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
तेनजिन पलजोर , तेनजिन जोरदेन

वितरण प्रबंधक
छोन्यी छेरिंग

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

नई सहस्राब्दी के लिए हृदय को शिक्षित करें 1

यूरोपीय संसद की अध्यक्ष चुने जाने पर रोबर्टा मेट्सला को बधाई 2

परम पावन दलाई लामा ने तिब्बती-अमेरिकी आफताब कर्मा पुरेवाल को सिनसिनाटी का नया मेयर चुने जाने का स्वागत किया 3

चेक गणराज्य के प्रधान मंत्री पेट्र फियाला ने बधाई-पत्र के लिए सिक्योंग को धन्यवाद दिया 4

तिब्बती मुद्दों पर अमेरिका के विशेष समन्वयक ने सिक्योंग के बधाई-पत्र पर धन्यवाद और तिब्बत को निरंतर समर्थन का आश्वासन दिया 5

लगभग एक दर्जन तिब्बतियों को मनमाने ढंग से हिरासत में लेकर प्रताड़ित किया गया, दूसरी बुद्ध प्रतिमा को ड्रैकगो विध्वंस में तोड़ा गया 6

दो तिब्बती भिक्षुओं को पांच महीने तक संपर्कहीन रखा; ड्रैकगो में चीनी सरकार की कुक्कुट पालन और सुअर पालन परियोजनाएं 7

भारतीय सांसदों को चीनी राजनीतिक काउंसलर के पत्र पर तिब्बती संसद का प्रेस वक्तव्य 8

निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल ने नरेन चंद्र दास के निधन पर शोक व्यक्त किया 9

निर्वासित तिब्बती संसद कीडिट्टी स्पीकर डोल्मा त्सेरिंग और सांसद नामग्याल डोलकर धर्मशाला में भारत के ७३वें गणतंत्र दिवस समारोह में शामिल हुए 10

समाचार -

तिब्बत पर नई ऑनलाइन साप्ताहिक संवाद शृंखला शुरू करने पर डीआईआईआर कलोन ने भारत-तिब्बत सहयोग मंच को बधाई दी 11

प्रतिनिधि न्गोडुप श्री डोंगचुंग ने एपीआईपीएफटी के संयोजक श्री सुजीत कुमार से मुलाकात की 12

तिब्बत के समर्थन में साइकिल यात्रा पर निकले भारतीय का पुडुचेरी विधानसभा परिसर में स्वागत 13

आईटीसीओ ने आईटीएफएस कलिम्पोंग को फिर से पुनर्जीवित और सक्रिय करने के लिए वर्चुअल बैठक आयोजित की 14

आईटीएफएस ने वर्चुअल बैठक कर 'भारत-तिब्बत मैत्री संघ संवाद' का आयोजन किया 15

चीन सरकार की पांडुलिपियों और ब्लूप्रिंट को उजागर करती है श्री चंद्र भूषण की पुस्तक- 'तुम्हारा नाम क्या है- तिब्बत' 16

फ्रांसीसी सीनेट में तिब्बत समूह की अध्यक्ष सीनेटर जैकलिन यूस्टाचे-ब्रिनियो ने कहा- फ्रांस को यूरोपीय संघ में तिब्बत के समर्थन में अग्रणी नेतृत्व करना चाहिए 17

स्कॉटिश संसद में सर्वदलीय समूह ने तिब्बत पर त्रैमासिक बैठक की 18

अरुणाचल प्रदेश के मियाओ में स्वैच्छिक समाज सेवा के लिए तिब्बती लड़के का सम्मान 19

प्रो श्रीकांत कोंडापल्ली 20

मुद्रक एवं प्रकाशक जमयांग दोरजी द्वारा प्रेम गुलाटी , डोली ऑफसेट प्रिंटर्स , डी -१५२ , एफ. एफ. सी. ओखला , नई दिल्ली -११००२० से मुद्रीत

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट
www.indiatibet.net
Email:
indiatibet7@gmail.com

शी जिनपिंग माओ की सांस्कृतिक क्रांति की नकल तिब्बत में कर रहे हैं 21

अपनी बात

भारत-चीन संबंधों में मजबूती हेतु तिब्बत समस्या का समाधान जरूरी

केन्द्रीय तिब्बती प्रषासन की ओर से प्रेशित नए साल २०२२ की बधाई स्वीकारते हुए हम सुनिष्चित करें कि भारत- चीन संबंधों को विष्वसनीय बनाने के लिये तिब्बत समस्या का समाधान जरूरी है। ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार भारत एवं चीन के बीच स्वतंत्र देष तिब्बत स्थित था। इसे मध्यस्थ राज्य (बफर स्टेट) कहा जाता था। तब भारत की सीमा तिब्बत से मिलती थी। भारत की सीमा से चीन काफी दूर था। इसीलिये चीन के साथ भारत का कोई सीमा विवाद नहीं था। दोनों देशों के बीच युद्व की स्थिति नहीं थी। चीन के साथ भारत के संबंध विष्वसनीय और मित्रतापूर्ण थे। परिस्थिति तब बदली जब चीन ने तिब्बत पर कब्जा कर लिया। साम्यवादी चीन ने ऐतिहासिक प्रमाणों से छेड़छाड़ की और बलपूर्वक तिब्बत पर कब्जा कर लिया। उसने १९४९ से ही प्रयास प्रारंभ कर दिये थे। मार्च १९५९ में वह पूर्णतः सफल हो गया। इसमें तत्कालीन भारतीय नेतृत्व का भरपूर मौन सहयोग रहा।

जब चीन ने स्वतंत्र तिब्बत को अपना अभिन्न अंग बताना शुरु किया उसी समय जयप्रकाष नारायण, दीनदयाल उपाध्याय, डॉ. अम्बेडकर, डॉ. राममनोहर लोहिया एवं अन्य राजनेताओं ने स्पश्ट कहा कि तिब्बत को हथियाने के बाद चीन का अगला निशाना भारत होगा। उन्होंने प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु को सावधान करते हुए सलाह दी कि वे चीन की साम्राज्यवादी नीति का विरोध करें। तिब्बत का पड़ोसी और विष्वसनीय मित्र होने के कारण विष्व समुदाय को भी भारत से ऐसी उम्मीद थी। जिस समय चीन द्वारा तिब्बत को हड़पने की साजिश जारी थी उसी समय नेहरु चीन को संयुक्त राश्ट्रसंघ में सुरक्षा परिशद का स्थायी सदस्य बनवा रहे थे। उन्हें विष्वास था कि अन्तरराश्ट्रीय संबंध एवं राजनीति में उनका ज्ञान एवं अनुभव ही भारतीय राश्ट्रीय हितों का संरक्षण करेगा। वे स्वयं साम्यवादी विचारों से प्रभावित होने के कारण चीन पर ज्यादा भरोसा करते थे। वे चीन के साथ पंचशील समझौता करने में लगे थे। हिन्दी- चीनी भाई भाई का उद्घोश कर रहे थे।

ऐतिहासिक सच्चाई है कि चीन ने स्पश्ट कहा था कि उसे भारत-चीन सीमा संबंधी मैकमोहन लाइन नामंजूर है। वह भारत की भौगोलिक सीमा का निरादर करते हुये कई भारतीय भूभागों को चीनी मानचित्र में प्रदर्षित कर रहा था। तिब्बत पर उसके सफल अवैध आधिपत्य और तब भारत की चुप्पी का यह दुश्परिणाम पहले से निष्चित था। चीनी विस्तारवादी साजिष से सुरक्षार्थ भारत को सीमावर्ती क्षेत्रों में बुनियादी एवं सामरिक सुविधाओं का विस्तार करना था। विष्वस्तर पर चीन की कूटनीतिक घेराबंधी करनी थी। चीन ने भारतीय उदासीनता और सामरिक कमजोरी का लाभ उठाते हुए १९६२ में दिवाली के समय भारत पर आक्रमण कर दिया। चीन ने बहुत बड़े भारतीय भूभाग भी हथिया लिये। तब नेहरु को लगा कि चीन ने उन्हें धोखा दिया है। इस आघात ने १९६४ में उनकी जान ले ली, जबकि भारत की हार के बावजूद वे आजीवन प्रधानमंत्री ओर विदेष मंत्री बने रहे।

इन कटु तथ्यों के बावजूद तिब्बती और तिब्बत समर्थक जवाहरलाल नेहरू के प्रति कृतज्ञ हैं कि चीनी विरोध के बावजूद उन्होंने परमपावन दलाई लामा को उनके हजारों अनुयाइयों सहित भारत में शरण दी थी। भारतीय संसद ने १४ नवंबर १९६२ को अपने सर्वसम्मत प्रस्ताव में भारतीय भूभाग को चीनी आधिपत्य से मुक्त कराने का संकल्प लिया था। नेहरु के जन्मदिन अर्थात् १४ नवंबर को इस संकल्प को पूरा करने का निशचय अवष्य दोहराना चाहिये। यह संकल्प शिक्षण संस्थानों के पाठ्यक्रमों में भी प्रमुखता से शामिल हो।

चीन सरकार हांगकांग, ताइवान तथा पूर्वी तुर्किस्तान को भी अपना शिकार बनाने में लगी है। भारत को चारों ओर से घेरने, अपमानित करने तथा नये भारतीय क्षेत्रों को चीन का क्षेत्र बताने का चीनी प्रयास लगातार जारी है। चीन के ही वुहान शहर से फैली कोरोना महामारी के बीच चीन ने २०२० में गलवान में घुसपैठ कर दी। उसने २०१७ में डोकलाम में भी ऐसा किया था। वह अरुणाचल प्रदेश को भी चीन का हिस्सा बता रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत की कूटनीतिक-सामरिक तैयारी और सफलता ने चीन को अहसास करा दिया है कि उसके विस्तारवादी प्रयास अब सफल नहीं होंगे।

नरेन्द्र मोदी सरकार से अपेक्षा है कि वह निर्वासित तिब्बत सरकार, जो कि वास्तव में लोकतांत्रिक तरीके से तिब्बतियों द्वारा निर्वाचित सरकार है, के तिब्बत को "वास्तविक स्वायत्तता" संबंधी प्रस्ताव को मानने के लिये चीन पर दबाव बढ़ाये। परमपावन दलाई लामा एवं निर्वासित तिब्बत सरकार तिब्बत की पूर्ण आजादी की मांग को छोड़ चीन के संविधान और कानून के अनुरूप "वास्तविक स्वायत्तता" के लिए तैयार हैं। यही मध्यममार्ग है। इससे चीन की एकता-अखण्डता-संप्रभुता सुरक्षित रहेगी और तिब्बतियों को स्वशासन का अधिकार मिल जायेगा। प्रतिरक्षा और वैदेषिक मामले चीन सरकार रखे तथा अन्य विभाग तिब्बत सरकार को सौंपे जाये।

तिब्बत को वास्तविक स्वायत्तता मिलने से तिब्बत के साजिषपूर्ण चीनीकरण पर रोक लगेगी। तिब्बती क्षेत्र का भारत के खिलाफ दुरुपयोग रुकेगा। तिब्बत के साथ भारत के संबंध हज़ारो वर्शो से हैं। वे पुनर्जीवित होंगे। भारतीय कैलाष-मानसरोवर की पवित्र यात्रा करेंगे तथा तिब्बती भारत स्थित बौद्व स्थलों की। वर्तमान समय में चीन ने कैलाष-मानसरोवर यात्रा को भी भारी कमाई तथा जासूसी का माध्यम बना दिया है।

प्रो. श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, तिजारा (राजस्थान)
मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

• नई सहस्राब्दी के लिए हृदय को शिक्षित करें

dalailama.com

आभासी बैठक में परम पवन दलाई लामा

थेकछेन छोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। आज प्रातः परम पावन दलाई लामा का ब्राजील के पलास एथेना की प्रोफ़ेसर लिया डिस्किन ने हृदय को शिक्षित करने को लेकर एक व्याख्यान सत्र में हर्ष के साथ स्वागत किया। हालांकि, यह एक आभासी कार्यक्रम था। लेकिन परम पावन ने कहा कि यह असल में ब्राजील की उनकी पांचवीं यात्रा है।

श्रोताओं से परम पावन का परिचय कराते हुए डिस्किन ने शिक्षा के महत्व पर उनके द्वारा व्यक्त किए गए विचारों का उल्लेख किया और निर्वासित तिब्बती बच्चों के लिए स्कूल स्थापित करने के लिए किए गए उनके प्रयासों का हवाला दिया। उन्होंने उल्लेख किया कि किस तरह से उन्होंने ३० से अधिक वर्षों से आधुनिक वैज्ञानिकों के साथ विचारों का आदान-प्रदान किया है। उन्होंने जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय क्षति के बारे में परम पावन की लंबे समय से चली आ रही चिंता पर भी टिप्पणी की।

अपने उत्तर में, परम पावन ने सभी को 'सुप्रभात' और 'ताशी देलेक' कहा और बताया कि उनसे बात करने का यह अवसर पाकर वह बहुत प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं।

उन्होंने कहा, 'हाथियों के पास हमसे बड़ा दिमाग होता है, लेकिन हम इंसान ज्यादा बुद्धिमान हैं। हमारा विशिष्ट मानवीय गुण हमारी बुद्धि है। पिछले कुछ हज़ार वर्षों में, दुनिया ने बुद्ध सहित बड़ी संख्या में उपदेशकों और विचारकों को देखा है, जिन्होंने एक अद्भुत मानवीय बुद्धि का प्रदर्शन किया।'

'हालांकि, अगर इस बुद्धि को घृणा, क्रोध और भय के साथ जोड़ दिया जाए तो यह बहुत विनाशकारी हो सकता है। इसलिए, हमें इसके बजाय इसे सावधानी से सौहार्दता के साथ संयोजन करना चाहिए। हमारे शारीरिक स्वास्थ्य पर बुद्धि का अधिक प्रभाव नहीं पड़ेगा, लेकिन जब इसे करुणा और सौहार्दता के साथ जोड़ा जाता है तो यह मन की शांति लाता है और हमारे शारीरिक सेहत में सुधार करता है।'

'आजकल हर कोई शिक्षा के महत्व की सराहना करता है, लेकिन शिक्षा में एक व्यक्ति के अच्छे स्वास्थ्य के साथ-साथ परिवारों, समुदायों और दुनिया में बड़े पैमाने पर शांति और सौहार्दता के बारे में निर्देश शामिल होना चाहिए। मैं ज्यादा से ज्यादा लोगों को यह बताने के लिए प्रतिबद्ध हूं कि हम इंसान होने के नाते एक जैसे हैं। क्योंकि यही हमें भाई-बहन बनाता है। हथियार जमा करने और आपस में लड़ने का कोई मतलब नहीं है। मेरा मानना है कि यदि आप वास्तव में करुणामय रवैया अपनाते हैं तो हाथ में हथियार होने पर भी आपमें इसका उपयोग करने की कोई इच्छा नहीं होगी।

'जब मैं बच्चा था तो मेरे पास एक एयर-राइफल हुआ करती थी, जिससे मैं बच्चों को डरानेवाले बड़े-बड़े और अति आक्रामक पक्षियों को डराता था। लेकिन आज जब मैं हथियारों, सेनाओं और 'रक्षा' पर खर्च की जाने वाली राशि के बारे में सोचता हूं तो मुझे लगता है कि यह बहुत गुजरे जमाने की बात है और बड़ी गलती है। हमें इस सदी को और अधिक शांतिपूर्ण सदी और विसैन्यीकरण का युग बनाने की जरूरत है। हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि हम इतने सारे हथियारों का निर्माण इसलिए कर रहे हैं क्योंकि हम क्रोधित और भयभीत हैं। यदि हम पूरे मानव परिवार को एक समुदाय के रूप में पहचान सकते हैं, तो हमें विनाश के इन उपकरणों की आवश्यकता नहीं होगी।'

'शिक्षा में शांत और निडर रहने का प्रशिक्षण शामिल होना चाहिए। चूंकि वैज्ञानिक अब हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में सौहार्दता और मन की शांति के महत्व को तरजीह दे रहे हैं, इसलिए समय आ गया है कि इन गुणों को विकसित करने के लिए मन के प्रशिक्षण को सामान्य शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जाए।'

'मैं इस आधार पर करुणा लाने की बात करता हूं कि हम सभी इंसान होने के नाते समान हैं। मैं जहां भी जाता हूं, चाहे वह यूरोप, अफ्रीका या लैटिन अमेरिका हो, मैं मुस्कुराता हूं। यदि हमें इस सदी को शांतिपूर्ण शताब्दी और शांतिपूर्ण विश्व बनाना है तो सौहार्दता महत्वपूर्ण है। यही मैं आपके साथ साझा करना चाहता हूं।'

परम पावन के साथ प्रश्न-उत्तर सत्र का संचालन करने वाली डॉ. एलिजा कोज़ासा ने बताया कि वह खुद तंत्रिका विज्ञान की शोधकर्ता, माइंड एंड लाइफ इंस्टीट्यूट में फेलो और ब्राजील स्थित तिब्बत हाउस की अध्यक्ष हैं। सबसे पहले उन्होंने ही सवाल पूछा कि तंत्रिका विज्ञान किस तरह परोपकारिता और करुणा के बारे में शिक्षा को और बेहतर बनाने में मदद कर सकता है।

परम पावन ने उत्तर दिया कि यद्यपि हमारी इंद्रियों की उत्तेजना से हमारी चेतना आम तौर पर पहले से ही उत्तेजित है, सौहार्दता और करुणा की अवस्थिति मानसिक चेतना से जुड़ी है। हम मन की शांति को संवेदी स्तर पर नहीं, बल्कि मानसिक स्तर पर चाहते हैं। यही कारण है कि शिक्षा को अधिक शांतिपूर्ण दुनिया की स्थापना के लिए स्वस्थ दिमाग के साथ-साथ स्वस्थ शरीर को विकसित करने के तरीकों पर ध्यान देना चाहिए।

उन्होंने विस्तार से बताया कि हम मुख्य रूप से अपने भाइयों और बहनों के प्रति सच्ची सौहार्दता रखने का अनुभव करते हैं। अपनी अलग-अलग राष्ट्रीय पहचान, राजनीतिक समानताएं और विभिन्न धार्मिक आस्थाओं के बावजूद हम सभी मानवता का हिस्सा हैं। इसलिए हमें मानवता की एकता के आधार पर सौहार्दता विकसित करने की आवश्यकता है। सौहार्दता मन की शांति का स्रोत है और मन की शांति विश्व में शांति का मूल है।

परम पावन ने आगे कहा, इन दिनों लोगों के पास लोकतंत्र और सामाजिक उत्तरदायित्व का बहुत व्यापक अनुभव है, जो वृहत्तर समुदाय के प्रति उनकी चिंता और संबद्धता को दर्शाता है। यदि हम अधिक स्थिर लोकतांत्रिक समाज देखना चाहते हैं तो हमें अधिक लोगों को मन की शांति प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना होगा।

धरती माता के साथ हमारे संबंधों पर परम पावन ने घोषणा की कि यह संसार हर उस व्यक्ति का है जो इसमें रहता है। पर्यावरण की रक्षा करना हमारे अपने भविष्य की रक्षा करने को लेकर है, क्योंकि यह विश्व हमारा एकमात्र घर है। वैज्ञानिकों का स्पष्ट रूप से कहना है कि ग्लोबल वार्मिंग तेजी से बढ़ रही है और इसके साथ-साथ हम अधिक चरम जलवायु घटनाएं- बाढ़, सूखा और अगलगी- देख रहे हैं। उन्होंने दोहराया कि पर्यावरण की रक्षा करना हमारे अपने घर की देखभाल करने की बात है।

करुणा के प्रश्न पर लौटते हुए परम पावन ने स्पष्ट किया कि इसकी साधना कोई धार्मिक कृत्य नहीं है, जिसकी परिणति या तो स्वर्ग प्राप्ति में हो या भविष्य में बेहतर

जीवन प्राप्त करना हो। बल्कि यह इस बात को सुनिश्चित करने पर केंद्रित है कि यहीं और अभी एक अच्छा दैनिक जीवन प्राप्त हो सके। इससे व्यक्ति खुशमिजाज व्यक्ति बनता है। सौहार्दता बुनियादी रूप से अच्छा मानवीय गुण है। हमें इसकी आवश्यकता है चाहे हम ईश्वर को मानें या बुद्ध को या किसी को न मानें। परम पावन ने यह ध्यान दिलाया कि धर्म के घोर विरोधी चीनी कम्युनिस्ट भी वास्तव में गरीबों की मदद करने के लिए प्रेरित हुए हैं।

परम पावन से पूछा गया कि उन्होंने जिसे 'भावनात्मक निरस्त्रीकरण' कहा है, वह कोविड-19 महामारी से निपटने में किस तरह से हमारी मदद कर सकता है। इस पर उन्होंने उत्तर दिया कि हमारी शारीरिक भलाई हमारी भावनात्मक स्थिति से जुड़ी हुई है। जब हम चिंतित होते हैं और हमारा दिमाग परेशान होता है, तो हम बीमारी की चपेट में आने लगते हैं। जब हमारा मन शांत होता है तो उस आंतरिक शक्ति के कारण हमारा स्वास्थ्य बेहतर होता है। परम पावन ने टिप्पणी की कि वे प्रतिदिन सौहार्दता के बारे में सोचते हैं और इसे वास्तव में लाभकारी पाते हैं।

परम पावन ने पुष्टि की कि यदि जाति, राष्ट्रीयता और आस्था के गौण अंतरों पर कम ध्यान दिया जाए और यदि हम अन्य लोगों को 'हम' और 'उन' के संदर्भ में कम देखें तो बेहतर शांतिपूर्ण विश्व का निर्माण हो सकता है। उन्होंने कहा कि मानवता की एकता के लिए महत्वपूर्ण है कि हम इस तथ्य को स्वीकार कर लें कि मानव होने के नाते हम सभी समान हैं। उन्होंने उदाहरण देते हुए समझाया कि यदि हम अपने आप को किसी अनजान स्थान पर खोया हुए और अकेले पाते हैं और फिर किसी और को अपनी ओर आते हुए देखते हैं तो हमें खुशी होती है कि यहां एक और इंसान है जिससे हमें मदद मिल सकती है। हमें इस बात की चिंता नहीं होगी कि वे कहां से आए हैं या वे किस पर विश्वास करते हैं।

सामान्य जीवन में हम सब सिर्फ इंसान हैं और हमें एक साथ रहना है। मेरे समूह, मेरी जनजाति, मेरी राष्ट्रीयता के विचारों में विशेष रूप से व्यस्त होना अनावश्यक है। इसके बजाय हमें समग्र रूप से मानवता के बारे में चिंतित होने की आवश्यकता है।

परम पावन ने याद किया, 'जब मैं तिब्बत में ही था, उस समय मैं ज्यादातर केवल तिब्बत और तिब्बतियों के बारे में चिंतित रहता था। हालांकि एक बार जब मैं भारत सरकार का शरणार्थी और अतिथि बन गया तो मुझे एहसास हुआ कि दुनिया में कितनी अलग-अलग राष्ट्रीयताएं, धर्म और संस्कृतियां हैं। साथ ही वे जिन लोगों से संबंधित हैं, वे सभी मानव होने के नाते समान हैं और क्योंकि हम एक दूसरे पर निर्भर हैं इसलिए हम वास्तविक रूप से एक दूसरे को भाई-बहन के रूप में मान सकते हैं।'

परम पावन ने इस बात को फिर से दोहराया कि पर्यावरण संरक्षण के बारे में लोगों को शिक्षित करना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि तिब्बती पठार से निकलने वाली विशाल नदियां पूरे एशिया में लोगों को पानी की आपूर्ति करती हैं। वे लाखों लोगों के जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा, 'दलाई लामा के रूप में मैंने राजनीतिक मामलों से संन्यास ले लिया है, लेकिन पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए समर्पित हूं।

उन्होंने अपने एक सपने का उल्लेख करते हुए कहा कि उत्तरी अफ्रीका जैसे रेगिस्तानी क्षेत्रों में सौर ऊर्जा का उपयोग करके समुद्र के पानी को खारेपन से मुक्त किया जा सकता है, जिससे रेगिस्तान को हरा-भरा करने और सब्जियां और फल उगाने की क्षमता विकसित करने में मदद मिल सकेगी। उन्होंने अपना आकलन व्यक्त किया कि सौर और पवन ऊर्जा तिब्बत और मंगोलिया के बीच के रेगिस्तानी क्षेत्रों को बदलने में समान रूप से मदद कर सकती हैं।

• यूरोपीय संसद की अध्यक्ष चुने जाने पर रोबर्टा मेट्सला को बधाई

dalailama.com / २० जनवरी, २०२२

यूरोपीय संसद की अध्यक्ष श्रीमती रोबर्टा मेट्सोला

थेकछेन छोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। परम पावन दलाई लामा ने सुश्री रोबर्टा मेट्सोला को पत्र लिखकर उन्हें यूरोपीय संसद का अध्यक्ष चुने जाने पर बधाई दी है। परम पावन ने यूरोपीय संसद की अपनी पिछली यात्राओं को याद किया और उन्हें और तिब्बती लोगों को दिए गए आतिथ्य और समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया।

यूरोपीय संसद की सबसे कम उम्र की अध्यक्षा और इसकी तीसरी महिला अध्यक्षा के रूप में उनके निर्वाचन का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा, 'अगर मुझसे पूछा जाए तो मेरा मानना है कि महिलाएं दूसरों की भलाई के लिए पुरुषों की तुलना में अधिक सहानुभूति रखती हैं। इसलिए दुनिया को अधिक शांतिपूर्ण बनाने के लिए महिलाओं को बेहतर स्थिति में रखा जाना चाहिए।'

यूरोपीय संघ की प्रशंसा करते हुए परम पावन ने कहा कि यह 'विभिन्न राष्ट्रों और लोगों के बीच सहकारी और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए प्रेरक उदाहरण है और बेहतर समझ, घनिष्ठ सहयोग की आवश्यकता में दृढ़ता से विश्वास करने वाले और दुनिया के विभिन्न राष्ट्रों के बीच अधिक सम्मान की वकालत करने वाले मेरे जैसे लोगों के लिए और भी गहरा प्रेरक है।

उन्होंने कहा कि इस समय दुनिया कई चुनौतियों का सामना कर रही है और ऐसे नेताओं की जरूरत है जिनके पास दूरदृष्टि हो। मुझे विश्वास है कि अधिकांश मानवीय संघर्षों को खुलेपन और सुलह की भावना के साथ वास्तविक बातचीत के माध्यम से हल किया जा सकता है।'

तिब्बत पर टिप्पणी करते हुए परम पावन ने कहा, 'वास्तव में इसी भावना के साथ १९८८ में मैंने औपचारिक रूप से चीनी नेतृत्व के साथ पारस्परिक रूप से लाभकारी समाधान के माध्यम से तिब्बत के मुद्दे को हल करने का प्रस्ताव रखा था। मैंने जान-बूझकर अपना पक्ष प्रस्तुत करने के लिए स्थल के रूप में यूरोपीय संसद को चुना था। तब के मेरे विचार इस बात को रेखांकित करने के लिए हैं कि एक वास्तविक संघ केवल स्वेच्छा से तभी आ सकता है जब सभी संबंधित पक्षों को संतोषजनक लाभ मिले।'

अंत में परम पावन ने एक बार फिर अपना अभिवादन प्रस्तुत किया और उनके सफल कार्यकाल की कामना की।

• परम पावन दलाई लामा ने तिब्बती-अमेरिकी आफताब कर्मा पुरेवाल को सिनसिनाटी का नया मेयर चुने जाने का स्वागत किया

tibet.net / ६ जनवरी २०२२

सिनसिनाटी के मेयर तिब्बती-अमेरिकी आफताब कर्मा पुरेवाल

धर्मशाला। तिब्बती-भारतीय मूल के अमेरिकी नागरिक आफताब कर्मा पुरेवाल ने मंगलवार ४ जनवरी को सिनसिनाटी के नए मेयर के रूप में शपथ ली। इस अवसर पर इंडियाना, केंटकी और ओहियो के तिब्बतियों ने परम पावन दलाई लामा और सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग की ओर से नए मेयर को बधाई-पत्र प्रस्तुत किया।

७ दिसंबर २०२१ के पत्र में, परम पावन दलाई लामा ने लिखा,

'मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि इंडियाना, केंटकी और ओहियो के तिब्बती समुदाय सिनसिनाटी के अगले मेयर के रूप में चुने जाने पर तिब्बती और भारतीय विरासत के आफताब पुरेवाल को सम्मानित करने के लिए समारोह आयोजित कर रहे हैं।'

'जब हम तिब्बतियों को १९५९ में अपना देश छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था, हम सभी शरणार्थी थे जो शुरू में भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में बस गए थे। इसके बाद के वर्षों में उनमें से कुछ पश्चिमी देशों में बस गए और अंततः अपने-अपने शरण लिए हुए देशों के नागरिक बन गए।'

'तिब्बतियों के साथ बातचीत में हमेशा मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई है कि नई परिस्थितियों में रहने के बावजूद वे और उनके बच्चे अपने शरणदाता देश के विकास में योगदान करते हुए अपनी पहचान की भावना को बनाए रखने में सक्षम हैं।'

'हाल के वर्षों में तिब्बती मूल के लोगों ने भी सार्वजनिक सेवा के रूप में कनाडा, स्विट्जरलैंड और अमेरिका जैसे देशों में राजनीतिक पद और अवसर की तलाश शुरू कर दी है। परम पावन ने लिखा, 'मुझे आशा है कि लोगों के कल्याण के लिए उनकी सेवा में समर्पित रहते हुए वे अपने निर्वाचन क्षेत्रों में पिछड़े लोगों के लिए विशेष रूप से सौहार्दपूर्ण चिंता प्रदर्शित करेंगे।'

सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग ने भी नए मेयर को बधाई देते हुए एक पत्र भेजा है। अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए सिक्योंग ने कहा कि यह जीत आफताब के नेतृत्व में सिनसिनाटी के लोगों के भरोसे को दर्शाती है और उनसे तिब्बत के न्यायसंगत मुद्दे के पक्ष में अभियान जारी रखने का आग्रह किया।

• चेक गणराज्य के प्रधान मंत्री पेट्र फियाला ने बधाई-पत्र के लिए सिक्योंग को धन्यवाद दिया

tibet.net / २६ जनवरी २०२२

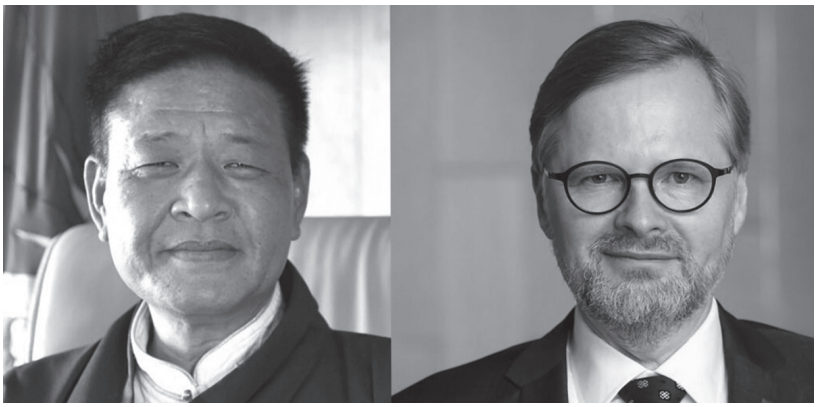

चेक गणराज्य के प्रधानमंत्री पेट्र फियाला और निर्वासित तिब्बत सरकार के सिक्यांग पेन्पा त्सेरिंग

धर्मशाला। नवंबर २०२१ में चेक गणराज्य के नए प्रधानमंत्री को बधाई देने वाले सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग के पत्र के जवाब में चेक गणराज्य सरकार के कार्यालय ने चेक प्रधानमंत्री पेट्र फियाला की ओर से सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग को धन्यवाद देते हुए एक पत्र भेजा है। प्रधानमंत्री ने परम पावन दलाई लामा और पूर्व चेक राष्ट्रपति वैक्लेव हावेल के बीच आजीवन मित्रता के परिणामस्वरूप बने तिब्बतियों और चेक गणराज्य के बीच गहरे संबंध पर भी जोर दिया।

दिनांक १९ जनवरी २०२२ को चेक गणराज्य की सरकार के कार्यालय ने लिखा:

'चेक गणराज्य के प्रधानमंत्री पेट्र फियाला की ओर से मैं उनकी नियुक्ति के अवसर पर भेजे गए बधाई-पत्र के लिए आपको तहे दिल से धन्यवाद देना चाहता हूं।'

'प्रधानमंत्री पेट्र फियाला परम पावन दलाई लामा और हमारे पूर्व राष्ट्रपति वैक्लेव हावेल की आजीवन मित्रता से बने मैत्रीपूर्ण संबंध को बहुत महत्व देते हैं। हमारी सरकार को स्वतंत्रता, लोकतंत्र, मानवाधिकार और कानून के शासन के हमारे सबसे पोषित मूल्यों को बढ़ावा देने के आधार पर दोनों राजनेताओं की विरासत का पालन करने पर गर्व है। इन सिद्धांतों के अनुरूप, हमारी नई सरकार हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समान विचारधारा वाले लोकतांत्रिक देशों के साथ अपने सहयोग को गहरा करने के लिए प्रतिबद्ध है।'

'अपने पत्र में आपने उल्लेख किया है कि कैसे हमारे देश ने तिब्बत के लोगों को स्वतंत्रता की राह पर चलने के लिए प्रेरित किया है। हमें इस प्रतिष्ठा को स्वीकार करने में बहुत गर्व का अनुभव हो रहा है और हम उन सभी को प्रेरणा देते रहना चाहते हैं जो स्वतंत्रता और मानवाधिकारों के लिए शांति से लड़ना चाहते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि स्वतंत्रता की लड़ाई कितनी लंबी और कठिन हो सकती है।'

'मैं इस चुनौतीपूर्ण समय में आपके स्वास्थ्य, ऊर्जा, साहस और दृढ़ता की कामना करते हुए अपना पत्र समाप्त करता हूं।'

• तिब्बती मुद्दों पर अमेरिका के विशेष समन्वयक ने सिक्योंग के बधाई-पत्र पर धन्यवाद और तिब्बत को निरंतर समर्थन का आश्वासन दिया

tibet.net / २० जनवरी २०२२

धर्मशाला। तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक उज़रा ज़ेया ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग को उनके बधाई-पत्र और अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी

ब्लिंकन द्वारा सोमवार २० दिसंबर को तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक के रूप में उनकी नियुक्ति का स्वागत करने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

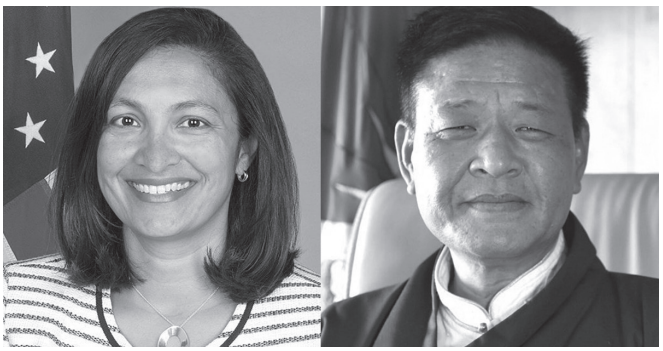

तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक श्रीमती उज़रा ज़ेया और सिक्यांग पेन्पा त्सेरिंग

६ जनवरी २०२२ को सिक्योंग को संबोधित पत्र में तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक ने लिखा,

'तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिका के विशेष समन्वयक के रूप में मेरी नियुक्ति के बाद २१ दिसंबर को आपके बधाई-पत्र के लिए धन्यवाद। मैं आपको २०२१ में पहले सिक्योंग के रूप में आपके निर्वाचित होने के लिए भी बधाई देना चाहता हूं।

'चीन सरकार और परम पावन दलाई लामा, उनके प्रतिनिधियों या तिब्बती समुदाय के नेताओं के बीच बिना किसी पूर्व शर्त के बातचीत की बहाली की आपकी मांग का अमेरिका भी समर्थन करता है।'

इसके अलावा, उन्होंने तिब्बतियों के मानवाधिकारों की सुरक्षा और उनकी विशिष्ट ऐतिहासिक, भाषाई, सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान के संरक्षण में अमेरिका के निरंतर समर्थन का आश्वासन दिया।

तिब्बती मुद्दों के विशेष समन्वयक ने भी तिब्बती शरणार्थियों को निरंतर मानवीय सहायता और सहयोग का आश्वासन दिया। इसके अलावा, पत्र में तिब्बत के पर्यावरण और जल संसाधनों की रक्षा के लिए अमेरिका की प्रतिबद्धता की पुष्टि की गई है।

कल पत्र प्राप्त करने पर सिक्योंग ने विशेष समन्वयक उज़रा ज़ेया को ट्वीट कर तिब्बती प्रतिनिधियों के साथ उनके हालिया सक्रिय जुड़ाव के लिए धन्यवाद दिया।

सिक्योंग ने ट्वीट किया, 'तिब्बत के मुद्दे को आगे बढ़ाने के हमारे प्रयासों को और मजबूत करने के लिए मैं आपसे व्यक्तिगत रूप से मिलने के लिए उत्सुक हूं।'

• लगभग एक दर्जन तिब्बतियों को मनमाने ढंग से हिरासत में लेकर प्रताड़ित किया गया, दूसरी बुद्ध प्रतिमा को ड्रैकगो विध्वंस में तोड़ा गया

tibet.net / १२ जनवरी २०२२

फुट की बुद्ध प्रतिमा के विध्वंस से पहले ली गई ड्रैकगो मठ की तस्वीर

तिब्बत। चीनी अधिकारियों द्वारा तिब्बती क्षेत्र में विध्वंसात्मक कार्रवाई जारी है। हाल ही में तिब्बत के खाम कर्ज़े के ड्रैकगो (चीनी: लुहुओ काउंटी) में एक विशाल बुद्ध प्रतिमा, ४५ विशाल प्रार्थना चक्रों और एक मठवासी स्कूल के विध्वंस के बाद दूसरी बुद्ध प्रतिमा को भी तोड़ दिया गया है। इसके अलावा, लगभग एक दर्जन तिब्बतियों को स्थानीय अधिकारियों द्वारा मनमाने ढंग से गिरफ्तार किया गया और हिरासत में लिया गया है।

गिरफ्तार किए गए लोगों में से कई की पहचान उस समय नहीं की जा सकी। मनमाने ढंग से गिरफ्तार किए गए और हिरासत में लिए गए लोगों में ड्रैकगो मठ के मठाधीश पागा, उनके सहायक न्यिमा, इसी नाम के एक अन्य भिक्षु तेनज़िन न्यिमा और ताशी दोर्जे शामिल हैं। ये दोनों ड्रैकगो मठ से हैं। ल्हामो यांग्क्याब नामक एक स्थानीय मूर्तिकार और एक अन्य व्यक्ति नोरपा त्सेरिंग समदुप को भी अज्ञात कारणों से ले जाया गया और हिरासत में लिया गया। इसके अलावा, भिक्षु तेनज़िन न्यिमा को 'उचित अभिव्यक्ति' नहीं दिखाने के लिए पीटा गया और गंभीर रूप से प्रताड़ित किया गया।

पिछले महीने विध्वंस के अलावा, ड्रैकगो में स्थानीय अधिकारियों ने एक और बुद्ध प्रतिमा, ड्रैकगो मठ परिसर के अंदर स्थित ३० फुट ऊंची मैत्रेय प्रतिमा को भी ध्वस्त कर दिया है। हमारे सूत्रों ने बताया कि चीनी काउंटी के अधिकारियों ने दो बार कोशिश की, लेकिन भविष्य के बुद्ध, जेत्सुन जम्पा गोंपो (मैत्रेय बुद्ध) की मूर्ति को ध्वस्त करने में वे विफल रहे। बाद में, बड़े बुलडोजरों और जेसीबी की मदद से उन्होंने मूर्ति रखने वाले पूरे तीन मंजिला मंदिर को ध्वस्त कर दिया।'

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के आधिकारिक प्रवक्ता तेनज़िन लेक्षय ने इन घटनाओं पर टिप्पणी की, 'खाम के ड्रैकगो में स्कूल, बुद्ध की मूर्तियों और प्रार्थना चक्रों के विध्वंस और बाद में चीनी अधिकारियों द्वारा तिब्बतियों की गिरफ्तारी और हिरासत के मामले तिब्बती संस्कृति, परंपरा और पहचान के प्रति चीन के आक्रामक रवैये की शो कास्ट हैं। यह धार्मिक स्वतंत्रता सहित मानवाधिकारों का गंभीर उल्लंघन है। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन तिब्बत में चीन की चल रही अत्याचारी नीतियों की निंदा करता है।'

अक्तूबर में चीनी अधिकारियों ने ड्रैकगो मठ द्वारा संचालित एक स्कूल गैडेन नांगटेन को जबरदस्ती ध्वस्त कर दिया। उनका आरोप था कि स्कूल ने भूमि उपयोग कानून का 'उल्लंघन' किया है। दिसंबर में चीनी सरकार ने ९९ फुट ऊंची बुद्ध प्रतिमा और ड्रैकगो मठ के पास ४५ विशाल प्रार्थना-चक्रों को ध्वस्त कर दिया, प्रार्थना झंडे को हटा दिया और जला दिया।

• दो तिब्बती भिक्षुओं को पांच महीने तक संपर्कहीन रखा; ड्रैकगो में चीनी सरकार की कुक्कुट पालन और सुअर पालन परियोजनाएं

tibet.net / १४ जनवरी २०२२

नेनांग मठ के तेनज़िन नोरबू और वांगचेन न्यिमा

तिब्बत। एक विश्वसनीय स्रोत ने बताया कि पांच महीने पहले खाम कर्ज़े के ड्रैकगो काउंटी में चीनी अधिकारियों द्वारा गिरफ्तार किए गए दो तिब्बती भिक्षुओं को तब से शेष दुनिया के संपर्क से काट कर रखा गया है।

ड्रेकगो में नेनांग मठ के तेनज़िन नोरबू और वांगचेन न्यिमा को १५ अगस्त २०२१ को गिरफ्तार किया गया था। हमारे स्रोत के अनुसार उन्हें वर्तमान में कर्ज़े (चीनी: गंजी) में तावू (चीनी: दाओफू) काउंटी जेल में रखा जा रहा है।

सूत्र ने कहा कि अधिकारियों ने दोनों भिक्षुओं की गिरफ्तारी और उनके परिवार के सदस्यों के आरोपों के बारे में कोई जानकारी नहीं दी है। इस कारण से उनके जीवन और सुरक्षा को लेकर खतरे की आशंका उत्पन्न हो गई है। हालांकि उनकी गिरफ्तारी का कारण स्पष्ट नहीं है। संदेह है कि उनकी गिरफ्तारी का कारण मठ के स्थानीय तिब्बती बच्चों के लिए तिब्बती भाषा, संस्कृति और धर्म सिखाने वाली अनौपचारिक कक्षाओं के संचालन में उनकी भागीदारी हो सकता है। स्कूलों में तिब्बती भाषा के उपयोग को कम करने वाली चीन की शिक्षा नीति के कारण माता-पिता अपने बच्चों को स्थानीय मठों द्वारा आयोजित इन अनौपचारिक कक्षाओं में भेजते हैं। इस तरह की गतिविधियों के कारण भिक्षुओं पर चीनी अधिकारियों की अतिरिक्त निगरानी बढ़ा दी गई है। इस काम में लगे भिक्षुओं को निशाना बनाया जाता है और उन्हें निगरानी में रखा जाता है।

हमारे स्रोत ने बताया कि दो भिक्षु उन चीनी अधिकारियों के निशाने पर हैं और स्थानीय अधिकारी लंबे समय से उनकी निगरानी कर रहे हैं। वांगचेन न्यिमा तिब्बतियों की शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए एक प्रसिद्ध पैरोकार हैं। उन्हें इससे पहले २०१५ में गिरफ्तार किया गया था, जब चीनी सरकार ने उनके मठ के स्कूलों को जबरन बंद कर दिया था। उसी समय उनके भाई ओरग्यान चोएद्रक को भी गिरफ्तार किया गया था।

दोनों भिक्षु आपस में भाई हैं और नेनांग मठ के एक सम्मानित और श्रद्धेय मठाधीश टुल्कू चोएक्यी न्यिमा के भतीजे भी हैं। टुल्कु चोएक्यी न्यिमा खेंपो जिग्मे फुंटसोक के छात्र रहे हैं और एक सम्मानित न्यिंग्मा लामा हैं और सबसे बड़ी तिब्बती बौद्ध मठ अकादमी- लारुंग गार के संस्थापक हैं।

१८ अगस्त २०२१ की एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार, नेनांग मठ सभा हॉल में लगी आग में खेंपो थुबटेन और बुक्यो नाम के एक भिक्षु की मौत हो गई। तिब्बतियों का मानना है कि यह आग चीनी अधिकारियों द्वारा लगाई गई।

दिसंबर २०२१ से ड्रैकगो में रह रहे तिब्बती सांस्कृतिक क्रांति के दिनों की विध्वंसात्मक गतिविधियों की याद को फिर से अनुभव कर रहे हैं। इस समय बुद्ध की दो विशाल मूर्तियों, प्रार्थना-चक्रों और झंडे सहित पूजा की अन्य वस्तुओं को ध्वस्त कर दिया गया है। उन्हें आगे तिब्बती पहचान यानी भाषा, संस्कृति और धर्म को कमजोर करने वाले आधिकारिक फरमानों और नीतियों का पालन करने के लिए कहा जाता है। इस तरह के आदेशों का पालन करने में विफल रहने के परिणामस्वरुप तिब्बतियों की गिरफ्तारी हो रही है, उन्हें हिरासत में रखा जा रहा है, यातनाएं दी जा रही हैं और उनके साथ दुर्व्यवहार हो रहा है। हाल ही में की गई कार्रवाई के बारे में जानकारी तिब्बत के बाहर साझा करने के लिए कम से कम एक दर्जन तिब्बतियों को गिरफ्तार किया गया और उन्हें प्रताड़ित किया गया।

ड्रेको डिमोलिशन और चीनी सरकार की कुक्कुट और सुअर पालन परियोजनाएं:

ड्रैकगो में चीनी सरकार के विध्वंस शृंखला के बाद २१-२२ दिसंबर के बीच ३० फीट के बुद्ध जम्पा गोंपो (मैत्रेय, भविष्य के बुद्ध) की प्रतिमा को नष्ट करने के साथ चीनी अधिकारी अब ड्रैकगो में गादेन नामग्याल लिंग में लामाओं और भिक्षुओं के क्वार्टर को ध्वस्त कर रहे हैं।

इसके अलावा सरकार कुक्कुट पालन और सुअर पालन परियोजनाओं को बढ़ावा दे रही है। अधिकारी तिब्बतियों को इसके लिए केंद्रों को बनाने के लिए मजबूर कर रहे हैं, जबकि आदेशों का पालन नहीं करने पर स्थानीय लोगों को भारी आर्थिक दंड और जेल की सजा की धमकी दे रहे हैं। इसके अलावा, अधिकारी इस तरह के पोल्ट्री और सुअर पालन केंद्रों को उसी स्थान पर बनाने की योजना बना रहे हैं, जहां उन्होंने गाडेन नांगटेन स्कूल को तोड़ा था। ड्रैकगो मठ द्वारा संचालित इस स्कूल को पिछले अक्तूबर में ध्वस्त कर दिया गया था।

तिब्बतियों को 'देशभक्ति शिक्षा' और प्रशिक्षण की आवश्यकता के नाम पर मनमाने ढंग से गिरफ्तार किया जाता है और हिरासत में लिया जा रहा है। इन तरह के शिक्षण-प्रशिक्षण केंद्रों में उन्हें कम्युनिस्ट पार्टी के शासन की प्रशंसा करने और चीनी भाषा सीखने के लिए मजबूर किया जाता है। अधिकारी 'चेहरे पर अनुचित अभिव्यक्ति' दिखाने और प्रशिक्षण सत्रों में भाग लेने से इनकार करने जैसी छोटी-छोटी बातों के लिए भी तिब्बतियों को गंभीर रूप से दंडित कर रहे हैं।

हमारे स्रोत ने बताया कि, 'उन देशभक्ति शिक्षण-प्रशिक्षण में भाग लेने और ड्रैकगो में चीनी अधिकारियों के हाथों गंभीर मार झेलने की निरंतर परीक्षा नवंबर २०२१ की शुरुआत से ही हो रही है।' पिटाई इतनी दर्दनाक तरह से हुई कि कई तिब्बती कथित तौर पर होश खो बैठे हैं जबकि एक भिक्षु की आंखों में गंभीर चोट आई है।

• भारतीय सांसदों को चीनी राजनीतिक काउंसलर के पत्र पर तिब्बती संसद का प्रेस वक्तव्य

tibet.net / ३१ दिसंबर, २०२१,

प्रेस वक्तव्य

तिब्बत के लिए सर्वदलीय भारतीय संसदीय मंच (एपीआईपीएफटी) के पुनरुद्धार के बाद २२ दिसंबर २०२१ को निर्वासित तिब्बती संसद द्वारा आयोजित रात्रि भोज में शामिल हुए भारतीय संसद के कई निर्वाचित माननीय सदस्यों को भारत में

चीनी दूतावास के राजनीतिक काउंसलर ने एक पत्र लिखा है।

ऐतिहासिक रुप से तिब्बत कभी भी चीन का हिस्सा नहीं रहा है। तिब्बत पर अवैध और हिंसक कब्जे के बाद से चीन ने अपनी क्रूर और कठोर नीति के तहत तिब्बतियों पर अत्याचार शुरु कर रखा है। तिब्बत में तिब्बती अपने मौलिक अधिकारों से वंचित हैं और तिब्बत की स्थिति आज भी गंभीर बनी हुई है। इसलिए, तिब्बती मुद्दा केवल 'आंतरिक मामला' नहीं है, जैसा कि चीन ने बार-बार दावा किया है। बल्कि यह तिब्बती अस्तित्व पर गंभीर संकट का विषय है। अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून का उल्लंघन और चीन द्वारा पड़ोसी देशों पर आधिपत्य जमाने की नीति अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए चिंता का विषय होना चाहिए। चीन ने आर्थिक विकास के नाम पर केवल अपने बढ़ते लालच को पूरा किया है और व्यवस्थित रुप से तिब्बत की सांस्कृतिक, पर्यावरणीय विरासत को नष्ट कर रहा है और तिब्बती पहचान को मिटा रहा है। अब चीन भारत समेत दुनिया भर के स्वतंत्र राष्ट्रों और लोकतांत्रिक देशों पर अपना दबदबा दिखा रहा है। तिब्बत पर अवैध रुप से कब्जा करने और बड़ी संख्या में तिब्बतियों को देश से भागने के लिए मजबूर करने के बावजूद, चीन स्वतंत्र देशों में रहने वाले तिब्बतियों के भी हर कदम की निगरानी कर रहा है।

चीनी काउंसलर द्वारा भारतीय संसद के माननीय सदस्यों को पत्र भेजने से यह स्पष्ट हो जाता है कि दुनिया भर में तिब्बत आंदोलन के बढ़ते समर्थन से चीन भयभीत है। स्वतंत्र देशों के नेताओं के पास तिब्बत के न्यायसंगत मुद्दे का समर्थन करने के अधिकार और जिम्मेदारियां हैं और हम चीन के इस कदम की कड़ी निंदा करते हैं।

निर्वासित तिब्बती संसद इसे आश्चर्य की बात नहीं मानती, क्योंकि चीनी सरकार अतीत में इसी तरह का व्यवहार करती रही है। चीन ने फिर से केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) को एक 'अलगाववादी राजनीतिक समूह' कहा है। जबकि दुनिया जानती है कि केंद्रीय तिब्बती प्रशासन दुनिया भर में तिब्बत और तिब्बतियों की एकमात्र वैध प्रतिनिधिक संस्था है। तिब्बत के अंदर तिब्बतियों के मौलिक अधिकारों की रक्षा और सांस्कृतिक पहचान की सुरक्षा के हमारे प्रयास में कई देशों द्वारा सीटीए का गर्मजोशी से समर्थन किया गया है। तिब्बत के सक्रिय अहिंसक आंदोलन की अंतरराष्ट्रीय समुदाय द्वारा व्यापक रुप से सराहना की गई है। सीसीपी की बढ़ती आक्रामकता और दुष्प्रचार को देखते हुए आज तक कोई भी देश चीन के इस तरह के बेतुके दावे पर विश्वास नहीं करेगा।

निर्वासित तिब्बती संसद चीन सरकार के साथ समान और बिना शर्त बातचीत का खुले तौर पर स्वागत करती है

निर्वासित तिब्बती संसद, स्थान: धर्मशाला, (हिमाचल प्रदेश, भारत)

• निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल ने नरेन चंद्र दास के निधन पर शोक व्यक्त किया

tibet.net / ३१ दिसंबर, २०२१

धर्मशाला। छह दशक पहले भारत की धरती पर आने के बाद परम पावन १४वें दलाई लामा की सुरक्षा की कमान संभालने वाले असम राइफल्स के पूर्व हवलदार श्री नरेन चंद्र दास के निधन पर निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेंपो सोनम तेनफेल ने उनके परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की है।

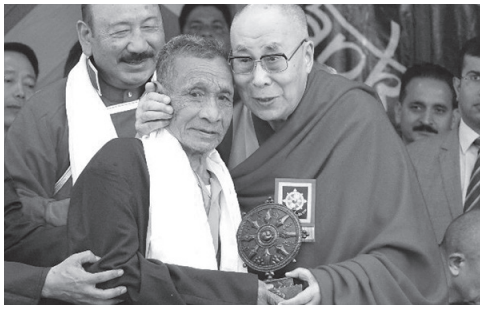

परम पवन दलाई के साथ असम राइफल्स के हवलदार श्री नरेन चंद्र दास।

अध्यक्ष ने दास के पुत्र को शोक संवेदना में लिखा, 'बहुत दुख के साथ हमें पता चला है कि आपके प्यारे पिता श्री नरेन चंद्र दास का निधन हो गया है। असम राइफल्स के पूर्व हवलदार श्री नरेन चंद्र दास उन सात जवानों में से अंतिम ज्ञात जीवित व्यक्ति थे, जिन्होंने ६२ साल पहले १९५९ में तिब्बत से भारत आगमन पर परम पावन दलाई लामा तेनज़िन ग्यात्सो को भारतीय धरती पर स्वागत किया था और उनकी सुरक्षा का जिम्मा संभाला था।'

१७वीं निर्वासित तिब्बती संसद और दुनिया भर के तिब्बतियों की ओर से मैं आपको और आपके प्यारे परिवार के प्रति अपनी गहरी और भावभीनी संवेदना व्यक्त करता हूं।'

'अप्रैल २०१७ में नरेन चंद्र दास और परम पावन दलाई लामा ने गुवाहाटी में एक भावनात्मक मुलाकात की, जहां उन्होंने १९५९ की मुलाकात को याद करते हुए उस क्षण को साझा किया। हमें 'धन्यवाद भारत' कार्यक्रम में धर्मशाला में उनका स्वागत करने का अवसर भी मिला। हम उनकी सेवाओं के लिए कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और उनके प्रति पूरा सम्मान प्रकट करते हैं।'

अध्यक्ष ने लिखा, 'हम तिब्बती १४वें दलाई लामा को १९५९ में भारतीय धरती पर सुरक्षित रुप से ले जाने के लिए श्री नरेन चंद्र दास के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। श्री नरेन चंद्र दास को राष्ट्र और भारत के लोगों के लिए उनकी उत्कृष्ट निस्वार्थ सेवा के लिए हमेशा याद किया जाएगा। हम तिब्बती उन्हें हमेशा अपने दिल के करीब रखेंगे। एक बार फिर मैं इस कठिन समय में आपके परिवार के लिए अपनी हार्दिक संवेदना और प्रार्थना व्यक्त करता हूं।'

• निर्वासित तिब्बती संसद की डिप्टी स्पीकर डोल्मा त्सेरिंग और सांसद नामग्याल डोलकर धर्मशाला में भारत के ७३वें गणतंत्र दिवस समारोह में शामिल हुए

tibet.net / २७ जनवरी, २०२२

धर्मशाला। भारत का ७३वां गणतंत्र दिवस २६ जनवरी २०२२ को पुलिस ग्राउंड, धर्मशाला में बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। निर्वासित तिब्बती संसद (टीपीईई) की डिप्टी स्पीकर डोल्मा त्सेरिंग तेखांग के साथ निर्वासित तिब्बती संसद के सदस्य लग्यारी नामग्याल डोलकर ने गणतंत्र दिवस समारोह में अतिथि के रुप में भाग लिया।

७३वें गणतंत्र दिवस समारोह में शामिल निर्वासित तिब्बती संसद की डिप्टी स्पीकर डोल्मा त्सेरिंग और सांसद नामग्याल डोलकर

गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि हिमाचल प्रदेश के बिजली मंत्री श्री सुख राम चौधरी और कांगड़ा से

लोकसभा सांसद श्री किशन कपूर, धर्मशाला के विधायक श्री विशाल नेहरिया, कांगड़ा के उपायुक्त डॉ. निपुण जिंदल, धर्मशाला नगर निगम के महापौर श्री ओंकार नेहरिया एवं अन्य अधिकारी अतिथियों के तौर पर उपस्थित रहे।

समारोह की शुरुआत मुख्य अतिथि द्वारा भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराने के साथ हुई। इसके बाद पुलिस दल द्वारा परेड जुलूस, मुख्य अतिथि के संबोधन और स्थानीय भारतीयों द्वारा जीवंत सांस्कृतिक प्रदर्शन की प्रस्तुतियां दी गईं।

इसके बाद, मुख्य अतिथि श्री सुख राम चौधरी, टीपीईई की उपाध्यक्ष डोल्मा त्सेरिंग तेखांग और अन्य मेहमानों ने भारत में मानव जीवन और स्वास्थ्य की रक्षा के लिए स्वैच्छिक मानवीय संगठन-रेड क्रॉस सोसाइटी, कांगड़ा- द्वारा आयोजित लॉटरी रैफल बॉक्स से विजेताओं को सम्मानित किया।

इसी तरह उपाध्यक्ष ने निर्वासित तिब्बती संसद और तिब्बती जनता की ओर से मुख्य अतिथि हिमाचल प्रदेश के ऊर्जा मंत्री श्री सुख राम चौधरी, अतिथिगण- कांगड़ा से लोकसभा सांसद श्री किशन कपूर और धर्मशाला के विधायक श्री विशाल नेहरिया को तिब्बती औपचारिक स्कार्फ ओढ़ाकर स्वागत किया और भारत के ७३वें गणतंत्र दिवस पर अपनी हार्दिक बधाई दी।

• तिब्बत पर नई ऑनलाइन साप्ताहिक संवाद शृंखला शुरू करने पर डीआईआईआर कलोन ने भारत-तिब्बत सहयोग मंच को बधाई दी

tibet.net / ३१ जनवरी, २०२२

भारत-तिब्बत सहयोग मंच द्वारा आयोजित तिब्बत पर नई ऑनलाइन साप्ताहिक संवाद

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) की कलोन नोरज़िन डोल्मा ने तिब्बत पर नई ऑनलाइन साप्ताहिक संवाद शृंखला शुरू करने पर भारत के सबसे बड़े तिब्बत समर्थक समूहों में से एक- भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) को बधाई दी। तिब्बत पर ऑनलाइन संवाद शृंखला २९ जनवरी २०२२ को शुरू की गई थी।

ऑनलाइन संवाद शृंखला के वर्चुअल लॉच में भाग लेने वाली डीआईआईआर की कलोन नोरज़िन डोल्मा ने कहा, 'नमस्ते। माननीय सिक्योंग श्री पेनपा त्सेरिंग और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की ओर से मैं आज यहां भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) के सभी सदस्यों को कल से यानी २९ जनवरी २०२२ से तिब्बत पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संवाद की इस ऑनलाइन साप्ताहिक शृंखला को शुरू करने की अविश्वसनीय पहल के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं व्यक्त करने आई हूं।

उन्होंने कहा, 'पूरे भारत के २५० से अधिक चैप्टर वाले तिब्बत समर्थक समूहों में से एक प्रमुख- भारत- तिब्बत सहयोग मंच- ने १९९९ में अपनी स्थापना के बाद से एक संगठन के रूप में भारत में विरोध मार्च से लेकर कार्यक्रमों, अभियानों तक की विभिन्न गतिविधियों के साथ तिब्बत के मुद्दे को सक्रिय रूप से उठाया और सशक्त बनाया है।'

अपने संबोधन का समापन करते हुए कलोन ने कहा, 'आज तिब्बत जन जागरूकता अभियान के हिस्से के रूप में तिब्बत पर ऑनलाइन संवाद शृंखला शुरू करने की यह पहल न केवल समय पर बल्कि तिब्बत के अंदर चीन के कब्जे और दमन की वास्तविकता को उजागर करने के लिए, चीन के जनवादी गणराज्य से वास्तविक स्वायत्तता की मांग करने वाली आधिकारिक मध्यम मार्ग नीति को मान्यता देने और चीनी सरकार पर चीन-तिब्बत वार्ता को फिर से शुरू करने के लिए दबाव डालने के लिए भी प्रासंगिक है। इतने सालों में आपके समर्थन के लिए मैं आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद करती हूं और इस नई पहल के लिए आप सभी को शुभकामनाएं देती हूं। जय भारत, जय तिब्बत।'

संगठन के आधिकारिक फेसबुक पेज के अनुसार, साप्ताहिक ऑनलाइन संवाद शृंखला तिब्बत जन जागरूकता अभियान के हिस्से के रूप में 'तिब्बत: वर्तमान परिदृश्य और भविष्य' विषय पर केंद्रित होगी। इसमें यह भी कहा गया है कि ऑनलाइन संवाद शृंखला का मुख्य उद्देश्य तिब्बत की मुक्ति और पवित्र कैलाश-मानसरोवर की मुक्ति के साथ-साथ मानवता की रक्षा के लिए एक बड़े सामाजिक जागरण का निर्माण करना है।'

• प्रतिनिधि श्री न्गोडुप डोंगचुंग ने एपीआईपीएफटी के संयोजक श्री सुजीत कुमार से मुलाकात की

tibet.net / १ फरवरी २०२२

श्री डोंगचुंग न्गोडुप के साथ एपीआईपीएफटी के संयोजक श्री सुजीत कुमार

नई दिल्ली। परम पावन दलाई लामा ब्यूरो ऑफिस, नई दिल्ली के प्रतिनिधि न्गोडुप डोंगचुंग ने सोमवार 31 जनवरी २०२२ को माननीय सांसद राज्यसभा और तिब्बत के लिए अखिल पार्टी भारतीय संसदीय मंच (एपीआईपीएफटी) के संयोजक श्री सुजीत कुमार से मुलाकात की।

प्रतिनिधि न्गोडुप ने श्री कुमार को खटक ओढ़ाकर स्वागत किया और उन्हें हाल ही में एपीआईपीएफटी के नए संयोजक के रूप में चुने जाने पर बधाई दी। श्री कुमार ने भी प्रतिनिधि को शॉल भेंट कर प्रति-स्वागत किया।

प्रतिनिधि न्गोडुप ने श्री कुमार को तिब्बत के अंदर की वर्तमान स्थिति, परम पावन दलाई लामा, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और इसके मध्यम मार्ग के बारे में जानकारी दी। श्री कुमार को परम पावन दलाई लामा ब्यूरो और उसकी भूमिका से भी परिचित कराया गया। उन्होंने श्री कुमार को इस वर्ष तिब्बत पर होने वाले आगामी विश्व सांसद सम्मेलन (डब्ल्यूपीसीटी) के बारे में भी अवगत कराया।

प्रतिनिधि न्गोडुप और श्री कुमार ने तिब्बती मुद्दे सहित तिब्बत संबंधी विभिन्न अन्य मामलों पर चर्चा की। प्रतिनिधि ने श्री कुमार से अनुरोध किया कि कम्युनिस्ट चीन द्वारा नष्ट किए जा रहे तिब्बत की राजनीति, संस्कृति, भाषा, धर्म और पर्यावरण के मुद्दे को भारतीय संसद में उठाएं, क्योंकि ये मुद्दे भारत के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।

श्री कुमार ने परम पावन दलाई लामा के सम्मान में एपीआईपीएफटी के संयोजक की जिम्मेदारी के रूप में और अपनी व्यक्तिगत क्षमता में तिब्बत मुद्दे को पूर्ण समर्थन और सहायता का आश्वासन दिया। उन्होंने उल्लेख किया कि वे एपीआईपीएफटी को तिब्बती मुद्दे की वकालत करने में अधिक सक्रिय और जोशपूर्ण बनाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करेंगे।

प्रतिनिधि न्गोडुप डोंगचुंग ने तिब्बती मुद्दे को समर्थन देने के लिए श्री कुमार को अपना विनम्र आभार व्यक्त किया और उनके भविष्य के कार्यों के लिए शुभकामनाएं दीं।

अंत में, प्रतिनिधि न्गोडुप डोंगचुंग ने श्री सुजीत कुमार को तिब्बत पर कुछ पुस्तकें प्रस्तुत कीं, जैसे कि तिब्बत ब्रीफ २०/२०, हिंदी में तिब्बत का राजनीतिक इतिहास और तिब्बत पर सातवां विश्व सांसद सम्मेलन: एक रिपोर्ट- जिस पर उन्होंने संक्षेप में चर्चा की।

• तिब्बत के समर्थन में साइकिल यात्रा पर निकले भारतीय का पुडुचेरी विधानसभा परिसर में स्वागत

tibet.net / ६ जनवरी २०२२

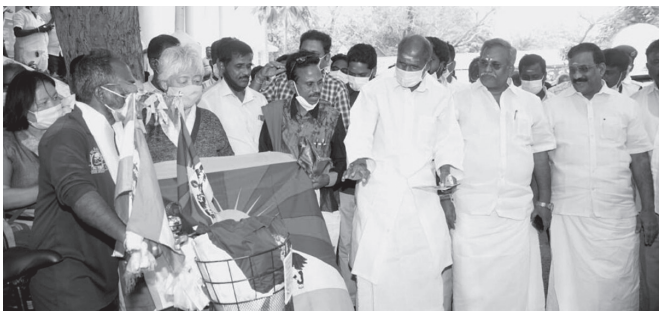

श्री संदेश मेश्राम के स्वागत समारोह में पुडुचेरी विधानसभा में माननीय मुख्यमंत्री श्री एन. रंगास्वामी, माननीय अध्यक्ष श्री आर. सेल्वम और अन्य गणमान्य हस्तियां

पुडुचेरी। श्री संदेश मेश्राम उर्फ समतेन येशी द्वारा शुरू की गई जनजागरण साइकिल यात्रा (दक्षिण भारत) २ जनवरी २०२२ को केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी पहुंच गई, जहां भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस) पुडुचेरी के अध्यक्ष श्री एस. अधवन, संयुक्त सचिव श्री आई. पांडियन एवं अन्य सदस्यों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया।

श्री संदेश मेश्राम ने १० दिसंबर २०२१ को कर्नाटक से साइकिल रैली की शुरुआत की। अपनी साइकिल यात्रा के दौरान उन्होंने पुडुचेरी पहुंचने से पहले उत्तर कन्नड़, केरल और तमिलनाडु के दक्षिणी भाग के कई गांवों, कस्बों और शहरों की यात्रा की।

४ जनवरी २०२२ को आईटीएफएस पुडुचेरी द्वारा श्री संदेश मेश्राम के सम्मान में स्वागत स्वागत समारोह का आयोजन पुडुचेरी विधानसभा के परिसर में किया गया। कार्यक्रम में पुडुचेरी के माननीय मुख्यमंत्री श्री एन. रंगास्वामी, पुडुचेरी विधानसभा के माननीय अध्यक्ष श्री आर.सेल्वम और पुडुचेरी से राज्यसभा के माननीय सांसद श्री एस. सेल्वा गणपति की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही।

आईटीएफएस पुडुचेरी के सदस्य श्री वेंकट सुब्रमण्यम ने स्वागत भाषण दिया और आईटीएफएस पुडुचेरी के अध्यक्ष श्री एस.अधवन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। माननीय अध्यक्ष श्री आर. सेल्वम ने श्री संदेश मेश्राम को तिब्बती हित में उनके कार्य के लिए सम्मानित किया। गणमान्य व्यक्तियों और कार्यक्रम में भाग लेने वाले अन्य सदस्यों को भी तिब्बत पर पैम्फलेट वितरित किए गए।

माननीय मुख्यमंत्री एन. रंगास्वामी ने जनजागरण साइकिल यात्रा के यात्री श्री संदेश मेश्राम को उनकी आगे की यात्रा के लिए झंडी दिखाकर रवाना किया और तिब्बती हित के लिए शुभकामनाएं दीं। आईटीएफएस पुडुचेरी के संयुक्त सचिव श्री आई. पांडियन ने सभी को धन्यवाद किया।

गणमान्य व्यक्तियों के अलावा कार्यक्रम में आईटीएफएस पुडुचेरी के सदस्यों, कलसांग, ऑरोविले तिब्बत मंडप के सोनम और अन्य सदस्य तथा प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक्स दोनों मीडिया के मित्रों ने भाग लिया।

पुडुचेरी में अपने प्रवास के दौरान श्री संदेश मेश्राम की मेजबानी ऑरोविले तिब्बत मंडप के आचा कलसांग ने की। उन्होंने ऑरोविले के आसपास के क्षेत्रों का दौरा किया और इस दौरान वे प्रसिद्ध तिब्बतविद् और लेखक श्री क्लॉउडे अर्पी से मिलकर प्रसन्न हुए।

जनजागरण साइकिल यात्रा (दक्षिण भारत) का मुख्य उद्देश्य तिब्बत के बारे में आम भारतीय जनता के बीच जागरुकता पैदा करना और चीनी कम्युनिस्ट सरकार द्वारा तिब्बत के क्रूर कब्जे के तहत इसकी कठोर वास्तविकताओं के बारे में वास्तविकताओं से अवगत कराना है। यह यात्रा भारत और तिब्बत के बीच सदियों पुराने संबंधों को फिर से मजबूत करने और जनता को शिक्षित करने के लिए है कि भारत की सीमा चीन के साथ नहीं, बल्कि तिब्बत के साथ लगती है।

साइकिल यात्रा १२ जनवरी, २०२२को कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु में समाप्त होगी।

• आईटीसीओ ने आईटीएफएस कलिम्पोंग को फिर से पुनर्जीवित और सक्रिय करने के लिए वर्चुअल बैठक आयोजित की

tibet.net / १९ जनवरी, २०२२

आईटीएफएस कलिम्पोंग को लेकर हुई वर्चुअल बैठक में हिस्सा लेते सदस्यगण

आईटीसीओ समन्वयक जिग्मे त्सुल्ट्रिम ने वर्चुअल मीटिंग में सदस्यों का स्वागत किया और बधाई दी। उन्होंने अक्तूबर- २०२१ में माननीय सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग की कलिम्पोंग की आधिकारिक यात्रा के दौरान वहां के लोगों की बेहद मांग को देखते हुए आईटीएफएस कलिम्पोंग को फिर से पुनर्जीवित और सक्रिय करने के

लिए आयोजित बैठक के उद्देश्यों के बारे में सदस्यों को बताया।

श्री त्सेवांग पलजोर ने सदस्यों को आईटीएफएस कलिम्पोंग के बारे में जानकारी दी। इसकी स्थापना १९९६ में स्वर्गीय लाचुंग आयिला, श्री तमदीन दोरजी ढुकपा, श्री पी.टी. भूटिया और स्वयं पलजोर ने अन्य सदस्यों के साथ की थी। उन्होंने सदस्यों को स्पष्ट किया कि आईटीएफएस कलिम्पोंग अभी भी मौजूद है, लेकिन दुर्भाग्य से २०१९ के बाद से यह अपने कई कार्यकारी सदस्यों के बुजुर्ग हो जाने और बाद में कोविड महामारी फैल जाने के कारण निष्क्रिय ही चल रहा है।

उन्होंने आगे उल्लेख किया कि आईटीएफएस कलिम्पोंग में कुल ५० सदस्य हैं। इनमें भारतीय और तिब्बती के अलावा नेपाली, डेन्जोंगपा, शेरपा, तमांग और अन्य समुदाय के लोग शामिल हैं।

श्री पेमा वांगदा भूटिया ने बताया कि वह २०१९ में कलिम्पोंग आए थे और टीएसजी सम्मेलन आयोजित करने के संबंध में श्री पी.टी. भूटिया और आईटीएफएस कलिम्पोंग के अन्य सदस्यों से बातचीत की थी। लेकिन कोविड महामारी के कारण यह योजना विफल हो गई और अभी भी लंबित है। उन्होंने आश्वासन दिया कि तिब्बती मुद्दे को तेज करने के लिए किसी भी गतिविधियों और कार्यक्रमों को चलाने में आईटीएफएस कलिम्पोंग के साथ उनका पूर्ण समर्थन हमेशा रहेगा।

टीएसओ धोंडुप संगपो ने सदस्यों को यह भी बताया कि कोविड की स्थिति के कारण टीएसओ कार्यालय गतिविधियों और कार्यक्रमों को चलाने में आईटीएफएस कलिम्पोंग के साथ सक्रिय रूप से समन्वय करने में सक्षम नहीं था। उन्होंने बताया कि जब कोविड की स्थिति सुधर जाती है तब उनका कार्यालय आईटीएफएस कलिम्पोंग के साथ भारतीय और तिब्बती भाईचारे और अंततः क्षेत्र में तिब्बती मुद्दों को तेज करने के लिए काम करेगा।

सदस्यों ने भी इस बैठक में अपने विचार और सुझाव रखे। इन्हीं सुझावों और विचारों के अनुरूप चर्चा की और तिब्बती आंदोलन को मजबूत करने के लिए गतिविधियों और कार्यक्रमों को चलाने के लिए आईटीएफएस कलिम्पोंग को पुनर्जीवित और फिर से सक्रिय करने की योजना बनाई।

अंत में, आईटीसीओ समन्वयक ने कलिम्पोंग में स्थित तिब्बती प्रदर्शन कला समूह- गंगजोंग दोघर के बारे में सदस्यों को अद्यतन जानकारी दी। गंगजोर दोघर हाल के दिनों में आईटीसीओ द्वारा समन्वित टीएसजी कार्यक्रमों में भाग ले रहा है और भारतीय जनता को तिब्बत की समृद्ध और सुंदर संस्कृति के बारे में जानकारी देने के साथ ही तिब्बत को लेकर जागरुकता फैला रहा है।

• आईटीएफएस ने वर्चुअल बैठक कर 'भारत-तिब्बत मैत्री संघ संवाद' का आयोजन किया

tibet.net / ३१ जनवरी २०२२

नई दिल्ली। भारत के सबसे पुराने तिब्बत समर्थक समूहों में से एक- भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस) ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की शहादत दिवस के अवसर पर रविवार ३० जनवरी, २०२२ को उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए पूरे भारत के अपने चैप्टरों में 'भारत-तिब्बत मैत्री संघ संवाद' शीर्षक से वर्चुअल बैठक का आयोजन किया।

भारत-तिब्बत मैत्री संघ की वर्चुअल मीटिंग

बैठक का मुख्य उद्देश्य तिब्बत के लिए सक्रिय रूप से काम करने के लिए समूह को पुनर्गठित और फिर से मजबूत करना था।

आईटीएफएस के आयोजन सचिव डॉ. मनोज कुमार ने आईटीएफएस वर्चुअल मीटिंग में सदस्यों का स्वागत किया और इस मीटिंग के बारे में उन्हें जानकारी दी।

आईटीएफएस के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. आनंद कुमार ने अपने परिचयात्मक भाषण में बताया कि भारत-तिब्बत मैत्री संघ कोविड महामारी के कारण अपने राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित नहीं कर रहा था, लेकिन इससे तिब्बती मुद्दे के लिए समूह के काम में बाधा नहीं आनी चाहिए। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए सदस्य वस्तुतः समय-समय पर मिल सकते हैं और समूह को सक्रिय रखने के लिए उन पर चर्चा, योजना निर्माण और कार्यक्रम तैयार कर सकते हैं।

बैठक में विशेष आमंत्रित निर्वासित तिब्बती संसद के पूर्व उपाध्यक्ष आचार्य येशी फुंटसोक ने तिब्बत के अंदर की स्थिति के बारे में बताया और दुनिया भर में चल रही तिब्बत समर्थक गतिविधियों से सदस्यों को अवगत कराया।

बैठक में भाग लेने वाले आईटीएफएस सदस्यों ने हाल के दिनों में अपने संबंधित चैप्टर में की जा रही गतिविधियों और कार्यक्रमों के बारे में अद्यतन जानकारी दी। बाद में सदस्यों ने विशेष रूप से इस कोविड महामारी के दौरान तिब्बती आंदोलन के लिए और अधिक तेजी से काम करने के लिए आईटीएफएस को फिर से मजबूत करने के लिए चर्चा की और अपने विचारों और सुझावों से संगठन को अवगत कराया।

बैठक में देश के अधिक से अधिक जिलों में आईटीएफएस शाखाओं का विस्तार करने का निर्णय लिया गया है ताकि भारतीय जनता में तिब्बत के बारे में अधिक जागरुकता पैदा की जा सके।

बैठक के दौरान सदस्यों ने तिब्बत मुक्ति साधना की यात्रा में अपना जीवन खो देनेवाले डॉ.दाऊजी गुप्ता, डॉ.पी.जी. ज्योतिकर, श्री हरीश अड्यालकर और अन्य सभी तिब्बत समर्थकों को हार्दिक श्रद्धांजिल अर्पित की।

वर्चुअल मीटिंग में कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया के राष्ट्रीय सह-संयोजक और आईटीएफएस मुजफ्फरपुर के सदस्य श्री सुरेंद्र कुमार, आईटीएफएस हजारीबाग के सदस्य और क्षेत्रीय संयोजक (सीजीटीसी-आई) श्री सुदेश कुमार चंद्रवंशी, आईटीएफएस गुजरात से डॉ. अमित ज्योतिकर, आईटीएफएस कलिम्पोंग के श्री त्सेवांग पलजोर, आईटीएफएस पटना के डॉ. देवेंद्र प्रसाद सिंह, आईटीएफएस जोधपुर की श्रीमती रेशम बाला, आईटीएफएस नैनीताल के श्री नवीन पनेरु, आईटीएफएस नागपुर के श्री अमृत बंसोड़ सहित २५ आईटीएफएस चैप्टरों ने हिस्सा लिया।

• चीन सरकार की पांडुलिपियों और ब्लूप्रिंट को उजागर करती है श्री चंद्र भूषण की पुस्तक- 'तुम्हारा नाम क्या है- तिब्बत'

tibet.net / १४ जनवरी २०२२

आईटीसीओ समन्वयक श्री जिग्मे त्सुल्ट्रिम और पत्रकार श्री चंद्र भूषण

दिल्ली। 'तुम्हारा नाम क्या है- तिब्बत' वरिष्ठ भारतीय पत्रकार श्री चंद्र भूषण द्वारा तिब्बत पर प्रत्यक्ष जानकारी के आधार भारत की प्रमुख भाषा हिन्दी में लिखी गई पुस्तक है। इसका अंग्रेजी में शाब्दिक अनुवाद 'व्हाट इज योर नेम- तिब्बत' होगा। वर्तमान में नवभारत टाइम्स में कार्यरत श्री चंद्र भूषण इससे पहले भी विभिन्न समाचार पत्रों में वर्षों तक पत्रकार के तौर पर काम किया है। उनकी 'इतनी रात गए' और 'आता रहूंगा तेरे पास' सहित कई कविता संग्रह और पुस्तकें अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं। पत्रकारिता के विज्ञान, शिक्षा और नैतिकता के अध्ययन में उन्होंने अपने अनुवाद कौशल का भी परिचय दिया है।

यह पुस्तक चीनी कम्युनिस्ट सरकार की उन पांडुलिपियों और ब्लूप्रिंट को उजागर करती है, जिसने १९४९ के बाद से तिब्बत के पारिस्थितिक संसाधनों को तबाह कर दिया है और इसकी सांस्कृतिक अस्मिता और तिब्बती पहचान को विलुप्ति के कगार पर पहुंचा दिया है। २०१५ में चीनी सरकार द्वारा पत्रकारों का तिब्बत दौरा कराने की योजना का हिस्सा रहे चंद्र भूषण ने ल्हासा, चेंगदू और तिब्बत के अन्य हिस्से की यात्राएं की थीं। यह पुस्तक समकालीन चीनी इतिहास, तिब्बती पहचान की कहानी, कम्युनिस्ट चीन की नई डिजाइन की गई नीतियों की विफलता, चीन के राष्ट्रवादी दृष्टिकोण के बढ़ने से होने वाली अपूरणीय क्षति और इस स्तर पर भारत की मजबूरी का रहस्योद्घाटन भी है।

श्री चंद्र भूषण की पुस्तक तिब्बत के अंदर उन तिब्बतियों की वास्तविकताओं और भावनाओं की सूक्ष्म अभिव्यक्ति भी है, जिन्होंने तिब्बत की स्वतंत्रता की लौ को अटूट और प्रज्जवलित रखा है और यातना, कारावास और दमन के चीन के सभी कठोर प्रयासों के बावजूद परम पावन १४वें दलाई लामा और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन में उनका विश्वास दृढ़ है।

प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता, प्रतिष्ठित समाजशास्त्री और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर (सेवानिवृत्त) डॉ. आनंद कुमार ने पुस्तक की प्रस्तावना में उम्मीद जताई है कि यह पुस्तक भारत-तिब्बत-चीन के त्रिपक्षीय अंतर संघर्ष की अंधेरी सुरंग को उजागर करेगी। पुस्तक का आधिकारिक विमोचन मार्च- २०२२ में दिल्ली और वाराणसी में किया जाएगा, जबकि पुस्तक डिजिटल बाजार में उपलब्ध हो गई है।

• फ्रांसीसी सीनेट में तिब्बत समूह की अध्यक्ष सीनेटर जैकलिन यूस्टाचे-ब्रिनियो ने कहा- फ्रांस को यूरोपीय संघ में तिब्बत के समर्थन में अग्रणी नेतृत्व करना चाहिए

tibet.net / १९ जनवरी, २०२२

श्री ताशी फुट्सोक के साथ सीनेटर श्रीमती जैकलिन यूस्टाचे-ब्रिनो, श्रीमती एनिक बिलन, श्री बर्नार्ड फोरनियर, श्री ओलिवियर रिटमैन, श्री लोइक हर्वे और श्री आंद्रे गैटोलिन

पेरिस। ब्यूरो डू तिब्बत- ब्रुसेल्स में प्रतिनिधि ताशी फुंटसोक ने १८ जनवरी २०२२ को पेरिस में फ्रांसीसी सीनेट के तिब्बत समूह के साथ बहुत उपयोगी बैठक की। इसमें सीनेटर श्रीमती जैकलीन यूस्टाचे-ब्रिनियो, श्रीमती एनिक बिलन, श्री बर्नार्ड फोरनियर, श्री ओलिवियर रिटमैन, श्री लोइक हर्वे और श्री आंद्रे गैटोलिन ने भाग लिया।

समूह की अध्यक्ष यूस्टाचे-ब्रिनियो ने तिब्बती प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया और कहा की कि महामारी के कारण कुछ समय के लिए बैठक आयोजित नहीं की जा सकी। हालांकि, उन्होंने समूह द्वारा की गई कई गतिविधियों को सूचीबद्ध किया, जिसमें मिशेल वैन वॉल्ट, तिब्बती सांसद थुप्टेन ग्यात्सो और पूर्व राजनीतिक कैदी धोंडुप वांगचेन आदि के साथ बैठकें शामिल हैं। उन्होंने आगे प्रतिनिधि से अनुरोध किया कि वे समूह की ओर से ईमानदारी से परम पावन दलाई लामा को शुभकामनाएं दें।

प्रतिनिधि ताशी फुंटसोक ने परम पावन के अच्छे स्वास्थ्य की सूचना देते हुए बैठक को प्रारंभ किया और बताया कि सीनेट में समूह का समर्थन मिलने पर वे समूह के प्रति बहुत आभारी हैं। उन्होंने १९८८ से तिब्बत के साथ समूह के लंबे जुड़ाव को याद किया, जिसमें सीनेट में सीनेटर लुई डी ब्रोसिया और नेशनल असेंबली में सांसद लियोनल लुका शामिल थे। उन्होंने तिब्बत की स्थिति को एक विशाल जेल और तिब्बत को दुनिया का सबसे कम मुक्त देश बताया। चीन के अधीन तिब्बत में तिब्बतियों की गुलामी की सबसे कष्टकारी कल्पना इसी बात से की जा सकती है तिब्बती कहते हैं कि तिब्बत से बाहर यात्रा करने के लिए पासपोर्ट प्राप्त करने की तुलना में स्वर्ग जाना आसान है। इसलिए, उन्होंने समूह से तिब्बत में पारस्परिक पहुंच और तिब्बतियों को उसी तरह की यात्रा सुविधा दिलाने के लिए काम करने का अनुरोध किया, जैसी कि चीनी राजनयिकों, पर्यटकों, छात्रों आदि को पश्चिम में यात्रा करने की स्वतंत्रता प्राप्त है।

चूंकि परम पावन दुनिया भर में और विशेष रूप से बौद्ध जगत के लिए सबसे सम्मानित नेता हैं और चूंकि दलाई लामा की संस्था उनकी विरासतों की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है, उन्होंने समूह से अनुरोध किया कि वे दलाई लामाओं के उत्तराधिकार पर फ्रांस से अपनी स्थिति की घोषणा करने का अनुरोध करें। जर्मनी, बेल्जियम, नीदरलैंड और अमेरिका की तरह कार्रवाई करने का अनुरोध करते हुए उन्होंने आगे कहा कि चीन पर बातचीत के लिए तिब्बतियों के साथ फिर से संपर्क शुरू करने का दबाव डालना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि परम पावन दलाई लामा की विरासतों को आगे बढ़ाने के लिए केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की मान्यता प्रदान करना है।

फ्रांस द्वारा यूरोपीय संघ की अध्यक्षता ग्रहण करने के अवसर पर प्रतिनिधि फुंटसोक ने महसूस किया कि यूरोपीय संस्कृति को बढ़ावा देने और राष्ट्रपति मैक्रोन की प्राथमिकताओं में उल्लिखित लोकतंत्रों के संरक्षण के लिए फ्रांस को यूरोपीय संघ का नेतृत्व करना चाहिए। यूरोप के इन क्षेत्रों पर चीनी अतिक्रमण वास्तविक और आक्रामक हैं और यूरोपीय संघ के बहुत से फाइबर को खतरा है। उन्होंने अनुरोध किया कि यूरोपीय संघ-चीन वार्षिक शिखर सम्मेलन और चीन के साथ मानवाधिकार वार्ता में तिब्बत के मुद्दों को सख्ती से लाया जाए।

बैठक का समापन करते हुए समूह की अध्यक्ष सीनेटर यूस्टाचे-ब्रिनियो ने टिप्पणी की कि तिब्बत के प्रश्न पर फ्रांस को यूरोपीय संघ का नेतृत्व करना चाहिए। वह इस बात से सहमत थीं कि तिब्बती संघर्ष चीन के सामने आने वाले अन्य मुद्दों की तुलना में कहीं अधिक गहरी जड़ों वाला, जटिल और ऐतिहासिक रूप से लचीला है। उन्होंने आगे महसूस किया कि जैसे-जैसे पश्चिम में निर्वासित तिब्बती समुदाय बढ़ते जा रहे हैं, उन्हें मजबूत बनाने और उनका समर्थन करने की आवश्यकता है। उन्होंने वादा किया कि समूह उन सभी मुद्दों पर काम करेगा जो प्रतिनिधि फुंटसोक ने अपने संबोधन में उठाए हैं।

प्रतिनिधि ताशी फुंटसोक के साथ ब्यूरो डू तिब्बत- पेरिस में सचिव नामग्याल समदुप और श्री तेनज़िन नामग्याल (तेनम) और सीनेट में तिब्बत समूह के सचिव श्री थिएरी मुनियर भी थे।

• स्कॉटिश संसद में सर्वदलीय समूह ने तिब्बत पर त्रैमासिक बैठक की

tibet.net / २९ जनवरी, २०२२

श्री ताशी फुट्सोक के साथ सीनेटर श्रीमती जैकलिन यूस्टाचे-ब्रिनो, श्रीमती एनिक बिलन, श्री बर्नार्ड फोरनियर, श्री ओलिवियर रिटमैन, श्री लोइक हर्वे और श्री आंद्रे गैटोलिन

लंदन : स्कॉटिश संसद में तिब्बत पर सर्वदलीय समूह की दूसरी तिमाही बैठक शुक्रवार को वर्चुअल माध्यम से हुई। बैठक की अध्यक्षता मर्सिडीज विलाल्बा एमएसपी और समूह के सह-संयोजकों ने की और समूह के सचिव एलेनोर बायर्न-रोसेनग्रेन ने इसकी मेजबानी की।

समूह की अध्यक्ष ने सदस्यों का स्वागत किया और बैठक में शामिल होने के लिए सभी सदस्यों को धन्यवाद दिया। इसके बाद अध्यक्ष ने अनुमोदन के लिए पिछली बैठक के कार्यवृत्त को पढ़ा और बैठक के एजेंडे को प्रस्तुत किया। सचिव ने शीतकालीन ओलंपिक अभियान पर सदस्यों को अद्यतन जानकारी दी, जिसमें ग्लासगो और एडिनबर्ग में इस सप्ताह के अंत में ओलंपिक अभियान के संबंध में होने वाली दो रैलियां और साथ ही १० मार्च की कार्ययोजना भी शामिल हैं।

प्रतिनिधि सोनम त्सेरिंग फ्रासी ने समूह को पिछले महीने पेरिस में आयोजित यूरोप में तिब्बती समुदायों की हालिया बैठक के बारे में सूचित किया, जिसमें बीजिंग शीतकालीन ओलंपिक अभियानों से संबंधित सामूहिक कार्रवाई और तिब्बत में प्रमुख मुद्दों पर अभियान चलाने को लेकर चर्चा की गई थी।

तिब्बत के कार्यालय से त्सेरिंग त्सोमो ने समूह को जुलाई में परम पावन दलाई लामा के ८७वें जन्मदिन के अवसर पर 'परम पावन दलिया लामा: चार प्रतिबद्धताओं के माध्यम से एक जीवन' पर तिब्बत कार्यालय की आगामी फोटो प्रदर्शनी परियोजना के बारे में सूचित किया और सदस्यों से योगदान करने को कहा।

तिब्बत वॉच के तेनज़िन चोएक्यी ने तिब्बत में लगातार हो रहे गंभीर मानवाधिकारों के उल्लंघन पर समूह को हालिया जानकारी दी और तिब्बती लेखकों के लापता होने और कुछ अन्य छात्रों को गिरफ्तार किए जाने के कुछ मामलों पर प्रकाश डाला। इन लोगों के बारे में उनके परिवारों को कोई जानकारी नहीं है। कई तिब्बतियों को मनमाने ढंग से हिरासत में लिया जाता है, प्रताड़ित किया जाता है, अपनी भाषा की साधना करने और अपनी संस्कृति को संरक्षित करने पर पीटा जाता है।

तिब्बत एक्शन इंस्टीट्यूट की निदेशक ल्हाडन टेथोंग ने तिब्बत एक्शन इंस्टीट्यूट की नवीनतम रिपोर्ट 'तिब्बत में चीन द्वारा औपनिवेशिक बोर्डिंग स्कूलों की भारी-भरकम प्रणाली' पर विशेष प्रस्तुति दी। सुश्री ल्हाडन ने कहा कि शोध से पता चलता है कि कम से कम ८,००,००० तिब्बती बच्चों को उनके परिवारों, समुदायों से अलग करके आवासीय स्कूलों में रखा जाता है। यह आबादी तिब्बत के सभी क्षेत्रों के, न कि केवल तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के, ६ से १८ वर्ष के आयुवर्ग के सभी स्कूली बच्चों की आबादी का ७८% हैं। उन बच्चों का परिवार से संपर्क बहुत सीमित होता है। उन्होंने युवा तिब्बती बच्चों को निशाना बनाने की चीनी नीतियों की कड़ी आलोचना की और तिब्बती पहचान और संस्कृति पर हमले को लेकर वैश्विक समुदाय का ध्यान आकर्षित करने के लिए इस मुद्दे को उजागर करने में समूह से समर्थन मांगा। ल्हाडन ने तिब्बत के भविष्य के बारे में गहरी चिंता प्रकट की।

सदस्यों ने तिब्बत के अंदर की स्थिति के बारे में गहरी चिंता व्यक्त की और तिब्बत के मुद्दे को अपना पूरा समर्थन देने का आश्वासन दिया। तिब्बत मुद्दे पर स्कॉटलैंड की संसद के सर्वदलीय समूह की ९० मिनट की लंबी संवादात्मक चर्चा समूह के सचिव द्वारा समापन संबोधन के साथ संपन्न हुई।

• अरुणाचल प्रदेश के मियाओ में स्वैच्छिक समाज सेवा के लिए तिब्बती लड़के का सम्मान

tibet.net / २७ जनवरी, २०२२

मियाओ। अरुणाचल प्रदेश में मियाओ बस्ती के तिब्बती मूल के एक लड़के तेनज़िन त्सेरिंग को बुधवार २६ जनवरी को भारत के ७३वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रशस्ति-पत्र प्रदान करके सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार अरुणाचल प्रदेश में जिला चांगलांग के मियाओ के अतिरिक्त उपायुक्त कार्यालय द्वारा प्रदान किया गया।

तेनज़िन त्सेरिंग को सम्मानित करते मियाओ के एडिशनल डिप्टी कमिशनर

तेनज़िन त्सेरिंग को २०२० में प्रतिष्ठित तिब्बती सिक्योंग छात्रवृत्ति मिली हैं। उन्हें अक्तूबर २०२१ से कक्षा ५ से ८ तक के छात्रों को मुफ्त ट्यूशन प्रदान करने में उनके योगदान को लेकर सम्मानित किया गया है। उन्होंने तिब्बती बस्ती के पास के चाय

बागान श्रमिकों के बच्चों को विशेष कक्षाएं चलाकर शिक्षा प्रदान की।

प्रशस्ति-पत्र में कहा गया है कि यह सम्मान 'मियाओ के टीआर कैंप के स्वयंसेवी शिक्षक श्री तेनज़िन त्सेरिंग को उनकी अथक सेवा और मियाओ सब डिवीजन के विकास के प्रति अत्यधिक समर्पण के लिए प्रदान किया गया है।'

• भारत को अपनी रक्षात्मक नीतियों को छोड़ने और आगे बढ़कर चीन का मुकाबला करने की जरूरत है

भारत के साथ हस्ताक्षरित चीन के सीमा प्रोटोकॉल को लागू करने में चीन की हठधर्मिता, उसके जुझारू सैन्यवाद और सीमा पर वर्चस्व के प्रयासों और भारतीय पड़ोस में हमलों ने भारत के साथ उसके संबंधों को तनावपूर्ण बना दिया है।

firstpost.com / प्रो श्रीकांत कोंडापल्ली, ०६ जनवरी २०२२

प्रो. श्रीकांत कोंडापल्ली

सीमावर्ती क्षेत्रों में सक्रिय सैन्य शत्रुता फिर से शुरू करने की दूर-दूर तक कोई संभावना न होने की बात को दरकिनार करते हुए चीन के साथ भारत के संबंध 'बाघ वर्ष' में निरंतर सशस्त्र गतिरोध की ओर बढ़ रहे हैं। अगर ऐसा होता है तो दोनों देशों के बीच के संबंधों के दशकों नहीं तो वर्षों पीछे चले जाने की आशंका है।

हालांकि हाल ही में द्विपक्षीय संबंधों में सुधार के लिए कुछ उत्साहजनक संकेत मिले हैं। कुछ रिपोर्टों में चीन से निवेश पर प्रतिबंध को आंशिक रूप से हटाने का संकेत दिया गया है जिसे एक व्यावहारिक संकेत के रूप में देखा जा सकता है। एक साल पहले भारत ने 'पड़ोसी देशों' से निवेश पर प्रतिबंध लगाया था। हाउसिंग डेवलपमेंट फाइनेंस कॉरपोरेशन, बजाज फाइनेंशियल और स्टार्ट-अप्स में पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना के निवेश में वृद्धि ने पहले भारत सरकार को झकझोर दिया था।

भारत भी अपनी ओर से कदम उठाते हुए क्वाड में शामिल हो गया है। उसने बीजिंग शीतकालीन ओलंपिक और पैरालंपिक का बहिष्कार नहीं करने का भी संकेत दिया है। यह फैसला नवंबर २०२१ के अंत में विदेश मंत्रियों की १८वीं रूस-भारत-चीन त्रिपक्षीय बैठक के दौरान आया।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने भी महासागरों में दूर-दराज के क्षेत्रों में स्थिति, नेविगेशन और समय सेवाओं के सुरक्षा संदेशों को लेकर भारतीय नक्षत्र (एनएवीआईसी) सुविधाओं के साथ नेविगेशन का विस्तार करने के लिए चीनी मोबाइल फोन कंपनी ओप्पो की भारतीय सहायक कंपनी के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। यह भारत में कई तिमाहियों में ठीक नहीं हुआ है, जिसने एक साल पहले २०० से अधिक चीनी ऐप्स पर प्रतिबंध लगा दिया था।

भारत की ओर से एक और संकेत बहुपक्षीय मंचों में इसकी निरंतर भागीदारी है जिसमें चीन एक सदस्य रहता है। जैसे कि शंघाई सहयोग संगठन, ब्रिक्स, रूस-भारत-चीन त्रिपक्षीय बैठक या जलवायु परिवर्तन के मुद्दों पर सीओपी-२६ की शिखर बैठकें आदि। भारत ने इन बहुपक्षीय पहलों पर चीन के साथ संपर्क बनाए रखा। हालांकि, संबंधों में एक सूक्ष्म गिरावट दिखाई दे रही है। भारतीय नेताओं ने इन मंचों के माध्यम से न केवल अप्रत्यक्ष रूप से चीन द्वारा लिखित समझौतों का पालन न करने का, बल्कि बुनियादी ढांचे के निर्माण के नाम पर राष्ट्रों की संप्रभुता का जान-बूझकर उल्लंघन करने का भी आरोप लगाया है। इसके अलावा, भारत अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए इन संस्थाओं के माध्यम से नई रणनीति अपना रहा है।

भले ही भारत ने ऐसी व्यावहारिक नीति बनाई, लेकिन यह स्पष्ट कर दिया कि चीन का सैन्यवाद स्वीकार्य नहीं है। उदाहरण के लिए, विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने २०२० में १५ जून की रात गलवान में २० भारतीय सैनिकों की दुखद हत्या के बाद चीन के प्रति भारत का मूल दृष्टिकोण प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा कि द्विपक्षीय संबंधों में सुधार के लिए पूर्वापेक्षाएं के तौर पर सीमाओं पर शांति और धैर्य स्थापित करना पूर्व शर्त है। । चूंकि कोर कमांडरों की १३ दौर की बैठक और डब्ल्यूएमसीसी की २३ दौर की बैठकों के बाद भी सीमावर्ती क्षेत्रों में 'सैनिकों की वापसी और विघटन और तनाव कम करने' की शुरुआत नहीं हुई है, इसलिए आशंका जताई जा रही है कि २०२२ में द्विपक्षीय संबंधों में एक बार फिर गिरावट का दौर आएगा।

तथापि, चीन ने गलवान और उसके बाद भारत के दृढ़तापूर्ण रवैये के खिलाफ कुछ तीर चला दिए हैं। जुलाई २०२१ में अरुणाचल प्रदेश से कुछ किलोमीटर उत्तर में निंगची प्रान्त का दौरा करके चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने भारत के खिलाफ एक सूक्ष्म हथियारों की दौड़, सैन्यीकरण और सीमा पर वर्चस्व के प्रयासों के खिलाफ मोर्चा खोलने के संकेत दे दिए। तिब्बत में 'अच्छी तरह से संपन्न समाज' वाले ६०२ गांवों का निर्माण करके चीन ने इस बारे में अपनी ओर से कार्रवाई शुरू करने के भी संकेत दे दिए हैं। इनमें से २०० गांव भारत से लगती सीमाओं पर बसाए गए हैं। चीन की संसद द्वारा पारित भूमि सीमा कानून इन क्षेत्रों पर पार्टी शासित सरकार के वर्चस्व को और बढ़ाता है।

इसके अलावा २९ दिसंबर २०२१ को इन घटनाओं से लापरवाह चीन ने भारत पर मनोवैज्ञानिक दबाव डालने के लिए अरुणाचल प्रदेश में १५ स्थानों के नामों के 'मानकीकरण' की दूसरी किश्त की घोषणा की। चीन ने इस तरह की पहली किश्त की घोषणा अप्रैल २०१७ में की थी। इन सभी अभूतपूर्व उपायों का उद्देश्य भारत को दबाव में लाना है। इन रुझानों का असर २०२२ में घटित होनेवाली घटनाओं में भी देखा जा सकेगा।

२०२२ में एक और प्रवृत्ति देखने को मिल सकती है। वह है-सूक्ष्म व्यापार और आर्थिक डी-कपलिंग प्रक्रिया, जो हाल ही में भारत और चीन के बीच चल रही थी। हालांकि द्विपक्षीय व्यापार २०२१ के पहले २० महीनों में १०२ अरब डॉलर से अधिक का हो गया है। यह ऐसा लक्ष्य है, जिसका मूल रूप से २००५ में उल्लेख किया गया था और २०२० तक जिसे पूरा किया जाना था। यह मुख्य रूप से भारत में महामारी के संक्रमण और अन्य सामानों का मुकाबला करने की मांग में वृद्धि के कारण है। दोनों देशों के बीच व्यापार की जाने वाली लगभग ४००० वस्तुओं में से १० प्रतिशत से भी कम आवश्यक वस्तुओं का मूल्य अधिक है।

भारत ने घरेलू उत्पादन बढ़ाकर या अन्य देशों की ओर व्यापार को मोड़ कर चीन से आयात को कम करने का फैसला किया। आगे व्यापार विविधीकरण और डिजिटलीकरण के लिए भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया के बीच आपूर्ति शृंखला लचीलापन पहल एक और उपाय है, जो बीच की अवधि में भारत-चीन व्यापार संरचना को प्रभावित करेगा।

एक और बड़ा क्षेत्रीय संदर्भ है जहां नए साल में भारत-चीन के बीच प्रतिस्पर्धा तेज हो सकती है। पहले से ही चीन ने चुनिंदा दक्षिण एशियाई देशों के साथ कई 'हिमालयी क्वाड' बैठकों के माध्यम से अफगानिस्तान में भारत की भूमिका को हाशिए पर कर देने की कोशिश की है। दक्षिण चीन सागर में चीन का सैन्यीकरण, दक्षिण-पूर्व एशियाई समूहों के साथ आचार संहिता के लिए उसका दबाव और इस क्षेत्र में नौवहन पर हालिया प्रतिबंध अन्य देशों की तरह भारत को भी बाधित कर रहे हैं। समुद्री

डकैती की घटनाओं का मुकाबला करने की आड़ में हिंद महासागर में चीन की ३६ नौसैनिक आकस्मिक बेड़ों ने भारत और अमेरिका को सैन्य संतुलन बनाए रखने के मामले में चिंतित कर दिया है।

चीन का एक घरेलू कारक भी २०२२ में भारत-चीन संबंधों को जटिल बना सकता है। ज्ञातव्य है कि चीन अक्तूबर २०२२ में २०वीं कम्युनिस्ट पार्टी कांग्रेस के लिए विभिन्न राजनीतिक गुटों के बीच एक नो-होल्ड वर्जित राजनीति शुरू करने जा रहा है। ऐसे में तिब्बत और अन्य मुद्दों पर विभिन्न समूहों से अपेक्षित सहयोग के बीच हान राष्ट्रीय कट्टरवाद यहां तीव्र और प्रतिस्पर्धी होगा। यह शिनजियांग, तिब्बत, भीतरी मंगोलिया और अन्य मुद्दों पर चीन पर पश्चिमी प्रतिबंधों की पृष्ठभूमि में भी है। विवेकपूर्ण ढंग से भारत ने चीन के साथ विवादास्पद मुद्दों का विस्तार करने से परहेज किया, लेकिन उसे बीजिंग से बढ़ते दबाव की पृष्ठभूमि में अपनी नीतियों का पुनर्मूल्यांकन करना पड़ सकता है।

कुल मिलाकर, भारत के साथ हस्ताक्षरित सीमा प्रोटोकॉल को लागू करने के लिए चीन की अकर्मण्यता, उसके जुझारू सैन्यवाद और सीमा पर वर्चस्व के प्रयासों और भारतीय पड़ोस में हमलों के परिणामस्वरूप भारत के साथ उसके संबंध तनावपूर्ण हो गए हैं। इसने वुहान और चेन्नई में दोनों नेताओं के बीच 'अनौपचारिक शिखर सम्मेलन' से हुई प्रगति को भी खतरे में डाल दिया है और द्विपक्षीय संबंधों में तेजी से गिरावट को शुरू कर दिया है जो २०२२ में जारी रहने की उम्मीद है। इस पृष्ठभूमि में भारत को अपनी रक्षात्मक नीतियों को छोड़ने और चीन पर आक्रामक रूप से दबाव बनाने की आवश्यकता है।

लेखक जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में चीनी अध्ययन के प्रोफेसर हैं। यहां व्यक्त विचार उनके निजी हैं।

• शी जिनपिंग माओ की सांस्कृतिक क्रांति की नकल तिब्बत में कर रहे हैं

tibet.net / ११ जनवरी २०२२

डॉ. आर्य त्सेवांग ग्याल्पो

डॉ. आर्य त्सेवांग ग्याल्पो

२०२२ के शीतकालीन ओलंपिक को शुरू होने में कुछ ही दिन बचे हैं। हालांकि, दुनिया खेलों के लिए तैयार नहीं दिख रही है। खुद चीन भी इसके लिए तैयार नहीं है। सीसीपी नेतृत्व शीतकालीन ओलंपिक पर ध्यान केंद्रित करने और कोरोना वायरस महामारी का प्रबंधन करने के बजाय तिब्बत, उग्यूर और दक्षिण मंगोलिया जैसे कब्जा किए गए क्षेत्रों में सांस्कृतिक क्रांति जैसे अत्याचार और विनाश को बढ़ावा दे रहा है।

हाल ही में ९९ फीट की बुद्ध प्रतिमा, ४५ विशाल प्रार्थना-चक्र, तिब्बती स्कूल को ध्वस्त करने और तिब्बत के खाम क्षेत्र के ड्रैकगो में प्रार्थना झंडे को जलाने जैसे कुकृत्यों से साफ है कि सीसीपी नेतृत्व अंतरराष्ट्रीय मानदंडों और मूल्यों का कोई सम्मान नहीं करना चाहता है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय की चुप्पी ने सीसीपी के गुंडों को गदान नामग्यालिंग मठ के पास जेत्सुन जम्पा गोंपो, बुद्ध मैत्रेय की मूर्ति को नष्ट करने के लिए प्रोत्साहित किया है। आजाद दुनिया के निरंतर मौन से प्रोत्साहन पाकर चीन तिब्बत और अन्य कब्जे वाले क्षेत्रों में माओ के युग की सांस्कृतिक क्रांति की शुरुआत करेगा।

दुनिया अभी भी कोरोना वायरस महामारी से उबर नहीं पाई है, जिसने भारी कष्ट पैदा किया है और अभी भी दुनिया भर में कहर बरपा रहा है। ५५ करोड़ से अधिक लोग मारे गए हैं और २२२ देशों में १० जनवरी तक लगभग ३१ करोड़ ज्ञात मामले थे। तो इन महामारी से होने वाली मौतों के लिए कौन जिम्मेदार है?

अपराधी की निंदा करने और उसे न्याय के कटघरे में लाने के बजाय, विश्व के नेताओं और अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) ने अपराधी को ओलंपिक की मेजबानी करने के लिए सम्मानित किया है।

ओलंपिक स्वतंत्रता, लोकतंत्र और दोस्ती का सम्मान करने के लिए खेलों में एक पवित्र मानवीय अनुष्ठान और उत्सव है। यह दुनिया भर के सभी लोगों की एकता और समानता की खुशी और उपलब्धि का जश्न मनाने के लिए है। लेकिन वास्तविकता और विडंबना यह है कि सीसीपी स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ है। इसलिए, यह भेड़िये की देखभाल के लिए मेमनों को जिम्मेदारी देने के समान है!

दुनिया को पता होना चाहिए कि ओलंपिक की मेजबानी चीन नहीं कर रहा है। बल्कि, यह सीसीपी और इसकी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) है जो खेलों की मेजबानी कर रहे हैं। वे इसे स्वतंत्रता, लोकतंत्र और मित्रता का सम्मान करने के लिए नहीं, बल्कि अपने देशवासियों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय को अपनी मूल्य प्रणाली- सत्ता बंदूक की नली से निकलती है- की सफलता और सर्वोच्चता के बारे में बताने के लिए आयोजित कर रहे हैं।'

अमेरिकी पेशेवर बास्केटबॉल खिलाड़ी एनेस कनेटर ने ठीक ही कहा है, 'चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ओलंपिक के उत्कृष्टता, सम्मान और दोस्ती के मूल मूल्यों का प्रतिनिधित्व नहीं करती है, और वे एक क्रूर तानाशाह हैं।' कनेटर ने कहा कि वह खुले तौर पर सीसीपी के अन्याय की निंदा करने के लिए सामने आए हैं, इसलिए नहीं कि वे चीन विरोधी हैं, बल्कि इसलिए कि वे न्याय-समर्थक और मानवता-समर्थक हैं।

२००८ में मानवाधिकार समूहों की आवाज़ों और तिब्बत में प्रदर्शनों के बावजूद, चीन को ओलंपिक की मेजबानी करने का सम्मान दिया गया था। हालांकि, सीसीपी नेतृत्व द्वारा भी क्षेत्रों में मानवाधिकारों, धार्मिक और प्रेस स्वतंत्रता में सुधार और बढ़ावा देने का वादा भी किया गया था। यह आशा करते हुए परम पावन दलाई लामा ने भी इसका समर्थन किया था कि यह चीन को अंतरराष्ट्रीय मानदंडों और समझ के अनुपालन के करीब लाएगा।

लेकिन हकीकत यह है कि ओलंपिक के बाद तिब्बत उग्यूर और दक्षिण मंगोलिया में मानवाधिकारों की स्थिति बद से बदतर हो गई। ओलंपिक से पहले लगभग २००० से ३००० तिब्बती प्रतिवर्ष भारत और विदेशों में भागते रहे। २००८ के बीजिंग ओलंपिक के बाद से यह उलझा हुआ था और २०१७ और २०१८ तक, केवल ३ या ४ थे। कहा जाता है कि तिब्बत अब पूरी तरह से निगरानी और जकड़न में एक पुलिस राज्य की तरह बन गया है। गांव के गांव को जासूसी नेटवर्क में बदल दिया गया है।

कोरोना वायरस महामारी और अंतरराष्ट्रीय चुप्पी का फायदा उठाते हुए सीसीपी नेतृत्व अब तिब्बती पहचान, संस्कृति और धार्मिक मूल्यों को खत्म करने के लिए साहसपूर्वक सामने आया है। लारुंग-गार और याचेन-गार मठों के विनाश के मामले अभी भी ज्वलंत हैं। ड्रैकगो में जो हो रहा है वह अकल्पनीय है और अंतरराष्ट्रीय कानून और चीनी संविधान के खिलाफ है।

शीतकालीन ओलंपिक की मेजबानी के लिए चीन के पास एक महीने से भी कम समय है, फिर भी चीन के पास तिब्बत में इस तरह के अत्याचार करने के लिए समय और हिम्मत है। यह आईओसी और अंतरराष्ट्रीय समुदाय का अपमान है।

विश्व के नेताओं के विनम्र और दोहरे रवैये ने चीन को भारत और भूटान में लगातार

सीमा पर घुसपैठ, जापान के शेनकाकू द्वीप और भारत-प्रशांत क्षेत्रों के आसपास आक्रामक सैन्य युद्धाभ्यास, हांगकांग में लोकतंत्र और स्वतंत्रता का गला घोंटने, ताइवान पर कब्जा करने के लिए खतरनाक रुप से खुला छोड़ दिया है। एशिया और दुनिया को जीतने के लिए सीसीपी की महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए निरंकुश नेतृत्व को जारी रखने के लिए ये सब किया गया है और वुहान के कोरोना वायरस ने इस आशय की पूर्ति के लिए सीसीपी के भेदिया-घुसपैठिया (ट्रोजन हॉर्स) की भूमिका निभाई है।

समय आ गया है कि विश्व के नेता और अंतरराष्ट्रीय समुदाय सीसीपी और उसके कोरोना वायरस को अधिक गंभीरता से लें और चीन और दुनिया को साम्यवादी तानाशाही की खतरनाक पकड़ से मुक्त करने के लिए ठोस प्रयास करें। यदि स्वतंत्रता, लोकतंत्र और कानून के शासन को अंतरराष्ट्रीय मानदंडों और मूल्यों के अनुरूप बनाए रखना है, तो चीन की नीति को बदलने की आवश्यकता है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय को दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्रों में महामारी और वर्तमान अस्थिर युद्ध जैसी स्थिति के लिए चीन की निंदा करने और उसे जिम्मेदार ठहराने के लिए तैयार रहना चाहिए।

ओलंपिक का कूटनीतिक बहिष्कार एक बात है। जबकि मानवाधिकारों के उल्लंघन के लिए बुरी तरह से बदनाम पार्टी को पवित्र ओलंपिक मशाल सौंपना कुछ ऐसा है जिस पर हम सभी को गहराई से विचार करने की आवश्यकता है। आनेवाली पीढियां हमसे सवाल करने के लिए बाध्य होगी और हमें उस दुनिया के लिए जिम्मेदार ठहराएगी, जो उन्हें विरासत में मिलेगी!

डॉ. आर्य त्सेवांग ग्याल्पो परम पावन दलाई लामा के जापान और पूर्वी एशिया संपर्क कार्यालय में प्रतिनिधि हैं। वह डीआईआईआर के पूर्व सचिव और धर्मशाला में तिब्बत नीति संस्थान के निदेशक भी रहे हैं।

अस्वीकरण: ऊपर व्यक्त विचार व्यक्तिगत हैं और जरूरी नहीं कि तिब्बत नीति संस्थान की आधिकारिक रुख को प्रतिबिंबित करें।

* * * * *

प्रतिनिधि श्री ताशी फुंटसोक ने ताइवान के प्रतिनिधि मिंग-येन त्साई से शिष्टाचार भेंट की

स्विट्जरलैंड और जर्मनी में तिब्बती समुदायों ने बीजिंग ओलंपिक २०२२ के राजनयिक बहिष्कार का आह्वान किया

प्रतिनिधि श्री नामग्याल छोडुप ने यूएसएआईडी ब्यूरो फॉर एशिया के उप सहायक श्रीमाती अंजलि कौर से वर्चुअल मुलाकात की

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Jigmey Tsultrim
Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

जिगमे त्सुलट्रिम
समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः indiatibet7@gmail.com

January, 2022, Years: 43 Issue: 01 Regd No. : RNI 34636-79

श्री ताशी फुंट्सोक के साथ सीनेटर श्रीमती जैकलिन यूस्टाचे-ब्रिनो, श्रीमती एनिक बिलन, श्री बर्नार्ड फोरनियर, श्री ओलिवियर रिटमैन, श्री लोइक हर्वे और श्री आंद्रे गैटोलिन

७३वें गणतंत्र दिवस समारोह में शामिल निर्वासित तिब्बती संसद की डिप्टी स्पीकर डोल्मा त्सेरिंग और सांसद नामग्याल डोलकर